हिन्दी मासिक

सच्चा राही

सामाजिक एवं साहित्यिक — लखनऊ

फरवरी, 2011 वर्ष 09 अंक 12

सम्पादक

डॉ० हारून रशीद सिद्दीक़ी

सहायक

मु० गुफ़रान नदवी

मु० हसन अन्सारी

कार्यालय

मासिक सच्चा राही

मजलिसे सहाफ़त व नशरियात

पो० बॉ० नं० 93

टैगोर मार्ग, नदवतुल उलमा, लखनऊ

फोन : 0522–2740406

: 0522–2741221

E-mail :

nadwa@sancharnet.in

सहयोग राशि

एक प्रति	रु0 12/–
वार्षिक	रु0 120/–
विशेष वार्षिक	रु0 500/–
विदेशों में (वार्षिक)	30 यु.एस डालर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें

"सच्चा राही"

पता

सेक्रेटरी, मजलिसे सहाफ़त व नशरियात

नदवतुल उलमा, लखनऊ, 226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

रब की रहमत में

अल्ला अल्ला अल्ला अल्ला
नहीं पूज्य है लेकिन अल्ला
नबी मुहम्मद बन्दे उसके
उन पे रहमत हरदम उतरे
उन पे उतरा रब का कलाम
अ़लैहिस्सलात् अ़लैहिस्सलाम
हम सब उनकी उम्मत में हैं
यानी रब की रहमत में हैं

(इदारा)

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

Desining & Editing by : Qamaruzzama- +91 94522 95052, +91 91258 94345

विषय एक दृष्टि में

क़ुर्आन की शिक्षा	मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी	3
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	4
अन्तिम सन्देष्टा हज़रत मुहम्मद (सल्ल0)	डॉ हारून रशीद सिद्दीकी	5
जगनायक	हज़रत मौ0 सै0 मुहम्मद राबे हसनी नदवी	7
इस्लाम तलवार से फैला या सद्व्यवहार से ?	अल्लामा सैय्यद सुलेमान नदवी	9
आइये हम सब मिलकर जीना सीखें	मौलाना सैय्यद अब्दुल्लाह हसनी नदवी	12
मुहम्मद हसन अंसारी अल्लाह की रहमत में	इदारा	16
दीनदारी की पहचान	मौलाना सैय्यद हमजा हसनी नदवी	17
आपके प्रश्नों के उत्तर	इदारा	18
क़ुर्आन मजीद के रुम्ज़े औक़ाफ़	इदारा	21
अहले बैत से अकीदत	इदारा	22
हम कैसे पढ़ायें	डॉ0 सलामतुल्लाह	23
सैलानी की डायरी	मुहम्मद हसन अंसारी	25
समाज सुधार के चार जरूरी काम		26
बाल साहित्य में नैतिक मूल्यों का महत्व	डॉ0 मर्जिया आरिफ	27
ख़वातीने इस्लाम	मौलाना अब्दुर्रहमान नग़ामी नदवी	28
मुस्लिम समाज	हज़रत मौ0 सै0 मुहम्मद राबे हसनी नदवी	31
नव वर्ष की आपबीती	सम्पादक	35
इस्लाम खुशामद नहीं करता हुक्म देता है	मौलाना सैय्यद अब्दुल्लाह हसनी नदवी	36
लाड़लों की गलती छुपाने से बाज़ आएं माएं		39
अंतर्राष्ट्रीय समाचार	डॉ0 मुईद अशरफ नदवी	40

कुर्आन की शिक्षा

—मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी

सूर—ए—बक़रह

अनुवाद : ऐ बनी इस्राईल[1] याद करो मेरे वह ऐहसान जो मैंने तुम पर किये[2] और तुम पूरा करो मेरा करार (प्रतिज्ञा) तो मैं पूरा करूँ तुम्हारा करार (प्रतिज्ञा)[3] और मुझ ही से डरो[4] और मान लो इस किताब को जो मैंने उतारी है सच बताने वाली है उस किताब का जो तुम्हारे पास है[5] और मत बनो सबसे पहले इन्कार करने वाले उसके[6] और न लो मेरी आयतों पर मोल थोडा और मुझ ही से बचते रहो और मत मिलाओ सही में गलत और मत छुपाओ सच को जान बूझ कर, और कायम रखो नमाज़ और दिया करो ज़कात और झुको नमाज में झुकने वालों के साथ[7]।

तफ़्सीर

1. पहले ख़िताब (सम्बोधन) आम था और उन नेमतों का ज़िक्र फ़रमाया था जो तमाम औलादे आदम पर आम थीं, मसलन ज़मीन व आसमान और सारी चीज़ों का पैदा करना, फिर हज़रत आदम को पैदा करके उनको ख़लीफ़ा बनाना और बहिश्त में दाख़िल करना वग़ैरह, अब उनमें से खास बनी इस्राईल को ख़िताब (सम्बोधित) किया गया, और खास नेमतें जो समय–समय पर पुश्तों से उन पर होती चली आईं और उन्होंने नेमतों की नाशुक्री की, उन सब बातों को तफसील से जिक्र किया जाता है, क्योंकि बनी इस्राईल तमाम फ़िरकों से बनी आदम में मुमताज़ (सर्वश्रेष्ट) और अहले इल्म व किताब व नबूवत और नबियों को पहचानने वाले समझे जाते थे, क्यों कि हजरत याकूब अलैहिस्सलाम से हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम तक चार हजार नबी उनमें आ चुके थे, तमाम अरब की नज़रें उनकी तरफ थीं कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल0) की तसदीक करते हैं या नहीं, इसलिए उन इनआमात और खराबियों को तफ़सील के साथ जिक्र फरमाया कि शरमा कर ईमान लाए, वर्ना और लोग उनकी हरकतों से वाकिफ़ हो कर उनकी बात का एतिबार न करें, और इस्राईल नाम है हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम का, उसका अर्थ है अब्दुल्लाह (अल्लाह का बन्दा)।

2. हजारों नबी उनमें भेजे गए, तौरैत वगैरह किताबें नाज़िल फरमाईं, फ़िरऔन से नजात देकर मुल्क शाम में तसल्लुत (अधिपत्य) दिया, मन व सलवा नाज़िल हुआ। एक पत्थर से 12 चश्में जारी किये जो नेमतें खिरके आदत (ईश्वरीय चमत्कार) किसी फिरके को नसीब नहीं हुईं।

3. तौरैत में यह क़रार किया था कि तुम तौरैत के हुक्म पर क़ाएम रहोगे और जिस पैगम्बर को भेजूँ उस पर ईमान लाकर उसके रफ़ीक़ (शुभचिन्तक) रहोगे तो मुल्क शाम तुम्हारे कब्जे में रहेगा (बनी इस्राईल ने इसको कबूल कर लिया था)। मगर फिर क़रार पर क़ाएम न रहे, बदनियती की, रिश्वत लेकर मसअले ग़लत बताए, हक़ को छुपाया, अपनी रियासत जमाई, पैगम्बर की इताअत न की बल्कि बाज़ पैगम्बर को क़त्ल किया, तौरैत में जहाँ हज़रत मुहम्मद सल्ल0 की सिफ़त (विशेषता) थी उसको बदल डाला इसलिये गुमराह हुए।

4. यानी दुनियावी नफ़े के ख़त्म होने से मत डरो।

5. तौरैत में बता दिया गया था कि जो नबी आए अगर तौरैत

शेष पृष्ठ......8 पर

प्यारे नबी की प्यारी बातें

–अनु0 नजमुस्साकिब अब्बासी नदवी

सलाम का बयान

–अमतुल्लाह तस्नीम

"कुर्आन"

तर्जुमा– ऐ ईमान वालो! अपने घरों के सिवा किसी घर में बग़ैर इजाज़त न जाया करो जब तक कि इजाज़त न ले लो और घर वालों को सलाम न कर लो। (सूरः नूर)।

तर्जुमा– जब तुम घरों में जाने लगो तो अपने लोगों पर सलाम करो ये दुआ–ए–ख़ैर अल्लाह की तरफ से बरकत वाली और उम्दा है। (सूरः नूर)

तर्जुमा– जब तुम को कोई दुआ दे तो तुम उसको उससे बेहतर दुआ दो या उलट कर वही दुआ दे दो। (सूरः निसा)

तर्जुमा– "क्या तुमको इब्राहीम के सम्मानित मेहमानों की ख़बर पहुँची? जब वह उन पर दाख़िल हुए और कहा सलाम तो इब्राहीम ने कहा सलाम" (सूरः जारियात)

"हदीस"

पहचान और अजनबी को सलाम

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस (रज़ि0) से रिवायत है कि एक आदमी ने हुज़ूर सल्ल0 से सवाल किया कि इस्लाम में कौन सी बात बेहतर है? हुज़ूर सल्ल0 ने इरशाद फरमाया खाना खिलाना और सलाम करना चाहे किसी से पहचान हो या न हो। (बुख़ारी–मुस्लिम)

"सलाम फरिश्तों की सुन्नत है"

हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि0) से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि–वसल्लम ने फरमाया अल्लाह ने जब आदम अलैहिस्सलाम को पैदा किया तो फरिश्तों की एक जमाअत की तरफ इशारा करके फरमाया जाओ उन लोगों को सलाम करो और जो तुमको दुआएँ दें वह ग़ौर से सुनना कि यही दुआ तुम्हारी और तुम्हारी औलाद के लिए होगी। हज़रत आदम अलैहिस्सलाम तशरीफ ले गये और कहा "अस्सलामु अलैकुम" फरिश्तों ने जवाब दिया "अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह" (फरिश्तों ने रहमतुल्लाह का इज़ाफा कर दिया)। (बुख़ारी–मुस्लिम)

"सलाम का रवाज"

हज़रत अबू अम्मारह (रज़ि0), बरा बिन आज़िब (रज़ि0) फरमाते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल0) ने हमें सात चीज़ों का हुक्म दिया है। मरीज़ की मिज़ाजपुर्सी, जनाज़े के साथ जाना, छींक का जवाब, कमज़ोर की मदद, मज़लूम की मदद, सलाम का रवाज और कसम खाने वाले की कसम का लिहाज़।

"सलाम मुहब्बत और ईमान का ज़रिया है"

हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि0) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल0) ने फरमाया जब तक ईमान न लाओगे जन्नत में नहीं दाखिल हो सकते और ईमान नहीं जब तक आपस में मुहब्बत न हो और क्या मैं तुम को ऐसी बात न बताऊँ कि जिस पर अमल करने से आपस में मुहब्बत पैदा हो जाए, ये है कि आपस में सलाम को रवाज दो। (मुस्लिम)

"सलाम की ताकीद"

हज़रत अबू यूसुफ अब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ि0) से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह (सल्ल0) से सुना है कि आप फरमाते थे "ऐ लोगो! सलाम को रवाज दो, खाना खिलाओ, सिला रहमी करो और नमाज़ ऐसे वक़्त पर पढ़ो जब लोग सो रहे हों (यानी तहज्जुद में) तो जन्नत में सलामती के साथ दाख़िल होगे"। (तिर्मिज़ी)

शेष पृष्ठ...... 8 पर

अन्तिम सन्देष्टा हज़रत मुहम्मद (सल्ल0)

-डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

इस संसार में जितने धर्म हैं, उन धर्मों को मानने वाले अपने धर्म गुरु को सर्वश्रेष्ठ मानते हैं। यहां तक कि धर्म विरोधी कम्युनिस्ट भी अपने नेता को अपने लिए आदर्श और उसे सर्वश्रेष्ठ मानते हैं। यहाँ का समाज इस प्रकार का है कि इसमें सभी धर्म वाले एक साथ मिलजुल कर रहते हैं। इसलिए हम इन धर्म वालों की मान्यताओं का सम्मान करते हुए मतभेद वाली बातों को नहीं छेड़ते लेकिन हम मुसलमानों का मानना है कि सृष्टिकर्ता (ख़ालिक़) व मालिक ने अपनी सृष्टि में सर्वश्रेष्ठ अपने अन्तिम नबी हज़रत मुहम्मद (सल्ल0) को बनाया है।

आप का जन्म प्रसिद्ध कथन के अनुसार 12 रबीउल अव्वल दिन सोमवार को मक्का मुकर्रमा में हुआ था, आप की माता का नाम *आमिना और* पिता का नाम अब्दुल्लाह था। आप अपनी माँ के पेट ही में थे कि आपके पिता अब्दुल्लाह का देहान्त हो गया था। आपके दादा अब्दुल मुत्तलिब की संरक्षाता में आप का पालन–पोषण हुआ। जब आप 6 वर्ष के हुए तो माता जी का देहान्त हो गया। फिर जब आप दस वर्ष के हुए तो दादा अब्दुल मुत्तलिब भी इस दुनिया से चले गये, अब आप अपने प्रिय चचा अबूतालिब के संरक्षण में थे।

मक्के में एक सुन्दर सभ्य तथा धनवान स्त्री बीबी खदीजा रहती थीं, उनके पति का देहान्त हो चुका था। मक्के के कुछ लोग उनके धन से साझे में व्यापार करते थे। हज़रत खदीजा ने हज़रत मुहम्मद (सल्ल0) को व्यापार में लगाया जिससे उन को बड़ा लाभ हुआ। वह हज़रत मुहम्मद (सल्ल0) के बर्ताव तथा स्वभाव से बहुत प्रभावित हुईं और स्वयं हज़रत मुहम्मद (सल्ल0) को अपने साथ शादी का सन्देश दे दिया। उस समय आप की आयु 25 वर्ष और हज़रत खदीजा की आयु 40 वर्ष थी, परन्तु आपने इस सन्देश को स्वीकार कर लिया और आप की शादी हो गई।

40 वर्ष की आयु में अल्लाह तआला ने अपने फरिश्ते हज़रत जिब्रील के द्वारा आपके पास हिरा गुफ़ा में अपना पहला सन्देश भेजा जो इक़्रा सूरः की आरम्भ की पाँच आयतें हैं। अब आपको नुबूवत का कार्य सौंपा गया। अल्लाह ने आपको इस संसार में इसी उद्देश्य के लिये भेजा था। अतः हम लोग जब आपका जन्म दिन मनाते हैं तो आप के सन्देशों को नहीं भुलाते। आप (सल्ल0) ने लोगों को एकेश्वरवाद (तौहीद) की शिक्षा दी और कहा ला इलाह इल्लल्लाह (अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूज्य नही है) कहो अर्थात दिल से मानो तथा जबान से कहो तो सफल हो जाओगे अर्थात दूसरे जीवन में अल्लाह तुमसे प्रसन्न हो कर पुरस्कृत करेगा तथा इस संसार में भी शान्ति देगा।

आप (सल्ल0) की शिक्षाओं में से यह है कि यह जीवन चाहे 100 वर्ष हो या और अधिक, क्षणिक है। इस जीवन के पश्चात् बड़े ही लम्बे समय तक का बरज़ख़ का जीवन है, इस बरज़ख़ के जीवन में भी कर्मानुसार सुख या दुख है। फिर क़ियामत आएगी। एक मैदान में सब लोग एकत्र होंगे, सब का लेखा जोखा होगा, फिर कर्मानुसार जन्नत या जहन्नम का फैसला होगा। जन्नती सदा जन्नत में रहेंगें। जन्नत में सुख ही सुख होगा। ऐसा सुख जिसे मनुष्य सोच भी नही सकता। जहन्नम में बहुत ही कष्ट दायक दुख होगा। ऐसा

दुख जिसे मनुष्य सोच भी नहीं सकता। जहन्नम में दो प्रकार के लोग होंगे एक वह जिन्होंने सत्य धर्म को नकारा होगा, अपने समय के सन्देष्टा को न माना हो वह तो सदा जहन्नम में जलेंगे। दूसरे वह जिन्होंने अपने समय के नबी को तो माना परन्तु उनसे कुछ पाप हो गये ऐसे लोग अपने पापों का दण्ड भुगत कर या किसी की सिफारिश से अर्थात किसी नबी या वली या पाप रहित बच्चों की सिफारिश से जहन्नम से निकाल लिये जाएंगे और उनको जन्नत में पवेश मिल जाएगा।

हज़रत मुहम्मद (सल्ल0) ने बताया कि मैं अल्लाह का रसूल (सन्देष्टा) हू, और अन्तिम सन्देष्टा हूँ, अब मेरे पश्चात कोई नबी या रसूल नही आएगा। अलबत्ता हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम जो चौथे आसमान पर हैं दज्जाल को मारने के लिए कियामत के करीब आसमान से उतारे जाएंगे। वह पहले से भी नबी हैं फिर भी वह मेरी शरीअत (मेरे लाये हुए विधान) पर चलेंगे। आपने बताया कि अब कियामत तक मुझ को नबी माने बिना और मेरा अनुकरण किये बिना कोई नजात अर्थात् परलोक के अजाब (प्रकोप) से बच नही सकता। यह बात ज्ञात रहे कि शैतान को तो कियामत तक की छूट मिली हुई है वह आदम की सन्तान को बहकाने की कसम खाये हुए है। इस प्रकार संसार में बुराईयां फैलती रहेंगी, लेकिन उन बुराइयों के समाधान तथा सुधार का काम हजरत मुहम्मद (सल्ल0) की उम्मत के विद्वान हज़रत मुहम्मद (सल्ल0) के लाये हुए विधान के प्रकाश में करते रहेंगे।

आप ने जब कहा कि मैं अल्लाह का रसूल हूँ और मुझ पर अल्लाह की वाणी (कलाम) उतरती है तो अल्लाह की नेक रूहों (आत्माओं) वालों को जरा भी शंका नहीं हुई और उन्होंने तुरन्त कह दिया कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं और निःसन्देह आप (अर्थात मुहम्मद सल्ल0) अल्लाह के रसूल हैं फिर भी आपकी दलील (तर्क) के तौर पर बहुत से मुअजिज़ात (चमत्कार) दिये गए थे, पेड़ों ने आप को इन्सानी आवाज में सलाम किया, पत्थर से सलाम की आवाज सुनी गई। गोह (गोहटा) ने आप के रसूल होने की गवाही दी, कंकरियों ने आप का कल्मा पढ़ा। आपने इशारा कर दिया तो चाँद के दो टुकड़े अलग-अलग देखे गये। आप ने थोड़े से पानी में उंगली डाल दी तो 14,15 सौ लोगों ने उससे वज़ू किया और पीया। साढ़े तीन सेर आटे में दुआ कर दी तो हजार आदमियों ने पेट भर भर कर खाया। आपकी जुदाई में लकड़ी का खम्भा आदमियों की तरह रोया। रातों रात आप मक्के से बैतुल मुकद्दस फिर वहाँ से आसमानों पर हो आए, अपने रब से बातें कर आए, जन्नत, दोजख के नजारे देख आए। इस प्रकार के हज़ारों चमत्कार आपसे प्रकट हुए ऐसे कि लोग धोखे में आ जाएं और कहीं आपको ईश्वरीय अवतार न समझने लगें। अल्लाह ने आपके द्वारा यह शिक्षा दी कि कहो मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूज्य नही और गवाही देता हूँ कि मुहम्मद (सल्ल0) अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं। अल्लाह ने आपके द्वारा सचेत किया कि अल्लाह पापों को क्षमा करने वाला है वह जिस पाप को चाहेगा क्षमा कर देगा। परन्तु अल्लाह उसके पापों को क्षमा न करेगा जो अल्लाह के साथ किसी को साझी ठहराएगा।

हज़रत मुहम्मद (सल्ल0) के जो उपकार हम पर हैं हम उनका बदला नही चुका सकते, हम जो भी दीनी काम करे तो सोचें कि यह दीनी काम हम को हज़रत मुहम्मद (सल्ल0) द्वारा ही मिला है। हमारा कर्तव्य है कि हम आपको रसूल मानें, आपसे प्रेम करें, आपका अनुकरण करें और आप सल्ल0 पर दुरूद व सलाम पढ़ा करें तभी हम सफल हो सकते हैं।

□□□□

जगनायक

हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी — अनु0 : मुहम्मद गुफ़रान नदवी

कुर्आन मजीद

अल्लाह की यह किताब पवित्र कुर्आन जिसमें पिछली कौमों के हालात और तौहीद व शिर्क (एकेश्वरवाद व अनेकेश्वरवाद) का फ़र्क और नेकी और बदी का अन्जाम (परिणाम) प्रभवित ढंग से बताया गया, यह किताब अरबों की ऐसी फ़सीह ज़बान में उतारी गई कि जिसको सुनकार अरब यह यकीन करने पर मजबूर हो गए थे कि मुहम्मद (सल्ल0) जबकि उम्मी हैं खुद से ऐसी जानकारी नहीं बयान कर सकते, फिर इसमें ऐसी फ़साहत व बलागत और ताकत (सुभाषण, सरलता और शक्ति) है जो इन्सानों के बस की नहीं, यह ज़रूर ऊपर से रब्बुल आलमीन की तरफ़ से भेजी गई है, इस तरह यह किताब इन्सानी ताकत से बाहर होने की वहज से एक मोजिज़ा (ईश्वरीय चमत्कार) बनी, यह "मोजिज़ा" नबी आख़िरुज़्ज़मा (अन्तिम नबी) को दिया गया, जिससे लोगों को यह यकीन कराया जा सके कि आप जो कह रहे हैं वह आप की ताकत व सलाहियत (क्षमता) से आगे की बात है, यह आसमान की तरफ से पैग़ाम आने की खुली दलील है, चुनांचे साबित हुआ कि यह अल्लाह की तरफ़ से "वही" है और उसकी हर "आयत" अल्लाह की एक निशानी है और "मोजिज़ा" है, और वाक़िआत से भी यही साबित हुआ, क्यों कि जिसने भी ग़ैर जानिबदार (निर्पेक्ष) हो कर इसको सुना वह प्रभावित हो कर ईमान ले आया, इस तरह बड़ी संख्या ईमान लाने वालों की ऐसी थी जो कलामें इलाही सुनकर ईमान लाई।

ग़लत अक़ीदों के सुधार की दअ़वत

मक्का मुकर्रमा पूरे अरब देश का केन्द्रीय पवित्र स्थान था, इसलिये यहाँ के लोगों को सत्य दीन इख़्तियार करने की दअ़वत देना ज़्यादा और अहमियत का काम था कि यहाँ जो होगा उसका असर (प्रभाव) पूरे अरब पर पड़ेगा, इसलिये आप बराबर काम में लगे रहे और जहाँ तक क़ाबिले अमल था अपनी बात लोगों के सामने रखते रहे कि एक अल्लाह पर ईमान लाओ, बुतों की इबादत को छोड़ो, तुम को यह बुत और मूर्तियाँ कुछ भी फाइदा नहीं पहुँचा सकतीं और अल्लाह के भेजे हुऐ नबी को मानो, यह अल्लाह के आख़री नबी हैं, अब कोई दूसरा नबी नहीं आएगा, और इस हक़ीक़त को भी तस्लीम करो, कि इस मौजूदा ज़िन्दगी के बाद की भी एक ज़िन्दगी है, वह आख़िरत की ज़िन्दगी है, इसके लिए तैयारी करो, दुनिया की ज़िन्दगी तो आख़िरत की ज़िन्दगी की खेती है, जो यहाँ बोओगे वह वहाँ खाओगे[1]।

काफ़िरों और मुशरिकों के अक़ीदे में फ़रिश्तों और जिन्नों के वजूद को मानने का अकीदा भी था, लेकिन वह फ़रिश्तों को अल्लाह तआला की बेटियाँ करार देते थे, गोया कि उनको भी खुदा की सी ताकत रखने वाला समझते थे, और ऐसा ही मुक़द्दस (पवित्र) जानते और जिन्नों को बुरी रूहें समझ कर उनको प्रभाव कारी समझते और उनको खुश करने के लिये उनकी तअ़ज़ीम (सम्मान) और उनसे मदद लेने की ज़रूरत समझते थे, और भी इस सिलसिले में तरह–तरह की ख़ुराफ़ात और ग़लत ख़्यालात दिल व दिमाग़ में बिठा रखे थे, नबी आख़िरुज़्ज़मां (अन्तिम नबी) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि–वसल्लम ने उनके उन

---

1 सीरते हलबिया: 1/461

ख़्यालात की दुरुस्ती फ़रमाई कि फ़रिश्ते भी अल्लाह की मख़लूक़ हैं और वह भी अल्लाह के हुक्मों के मुहताज और पाबन्द हैं, अलबत्ता यह न देखी जाने वाली मख़लूक़ हैं, यह अल्लाह तआला की तरफ़ से दिये हुऐ हुक्मों की तअ़मील के लिये मुक़र्रर हैं और उसी के मुताबिक़ काम करते हैं। और जिन्नात इन्सानों की तरह अल्लाह की मख़लूक़ हैं उन पर भी इन्सानों की तरह अपने ख़ालिक़ को मानने और अपने ख़ालिक़ (पैदा करने वाले) की इबादत करने को ज़रूरी क़रार दिया गया है, इन्सानों को अल्लाह ने उत्तम सृष्टि बनाया, और इन्सानों के ही सबसे श्रेष्ट व्यक्ति को सारी सृष्टि में सबसे उच्चतम क़रार दिया।

जारी..........

□□□□

किस्मत

न घबरा जोशे तूफ़ाँ से
खुदा पे छोड़ कश्ती को
पहुँच ही जाएंगे ऐ दिल
अगर किस्मत में साहिल है
कमी ना कर तू कोशिश में
मिले जो उस पे राजी हो
न काहिल बन मुकद्दर पर
यही किस्मत का हासिल है

इदारा

कुर्आन की शिक्षा.........

भी उसकी तसदीक़ करे तो उसको जानो सच्चा है, नहीं तो झूठा है। जानना चाहिऐ कि क़ुर्आनी अहकाम अक़ाएद और नबियों की ख़बरों और आख़िरत के हाल और अवामिर व नवाही (आदेश निषेध) तौरैत वग़ैरह पिछली किताबों के मुवाफ़िक़ हैं।

6. यानी क़ुर्आन को जान बूझ कर सबसे पहले झुटलाने वालों में मत हो नहीं तो क़ियामत तक इनकार करने वालों का वबाल तुम्हारी गर्दन पर होगा, मुशरिकों ने मक्का में जो इनकार किया है वह जिहालत और बेख़बरी के सबब किया है, जान बूझ कर हरगिज़ न किया है, इसमें तो पहल करने वाले तुम्ही होगें, और यह कुफ़्र पहले कुफ़्र से ज़्यादा सख़्त है।

7. यानी जमाअ़त के साथ नमाज़ पढ़ा करो, पहले किसी दीन में जमाअ़त के साथ नमाज नहीं थी, और यहूद की नमाज में रुकू न था, आयत का ख़ुलासा यह हुआ कि सिर्फ़ ऊपर कही हुई बातें नजात के लिये तुम को काफ़ी नहीं बल्कि तमाम उसूल (नियमों) में आख़िरी नबी की पैरवी करो नमाज़ भी उनके तरीक़े पर पढ़ो जिसमें जमाअ़त भी हो और रुकू भी।

जारी.........

प्यारे नबी की प्यारी बातें......

"सिर्फ सलाम के लिए बाज़ार जाना"

हज़रत तुफ़ैल बिन उबई बिन काब (रज़ि0) से रिवायत है कि वह हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़ि0) के पास आते फिर दोनों मिलकर बाज़ार जाते, हज़रत तुफ़ैल (रज़ि0) कहते हैं कि जब हम दोनों बाज़ार जाते तो हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि0) कबाड़ फरोश, ताजिर और मिस्कीन के पास से गुज़रते तो उसको सलाम करते। मैं एक दिन अब्दुल्लाह (रज़ि0) के पास आया उन्होंने कहा मेरे साथ बाज़ार चलो। मैंने कहा आप बाज़ार जा के क्या कीजिएगा न तो आप सौदे वाले के पास ठहरते हैं और न ही ख़रीद व फरोख़्त की बाबत सवाल करते हैं न मोल–तोल करते हैं न बाज़ार की मज्लिसों में बैठते हैं। इससे बेहतर है कि यहाँ बैठकर आपस में बात चीत करें। उन्होंने कहा, ऐ अबाबतन[1] हम तो सिर्फ सलाम के लिए जाते हैं कि जो हमसे मिले हम उसको सलाम करें।

(मुअत्ता इमाम मलिक)

1 हज़रत तुफ़ैल तोन्द वाले इसलिए अबा बतन कहते थे।

□□□□

इस्लाम तलवार से फैला या सद्व्यवहार से ?

— अल्लामा सैय्यद सुलेमान नदवी (रह0) संकलन— नजमुस्साकिब अब्बासी नदवी

मुसलमानों का उत्पीड़न

यहाँ इस विषय को इसलिए स्थान दिया गया है कि यूरोप व कथित भारतीय इतिहासकारों का सामान्य आरोप है कि इस्लाम तलवार से फैला जबकि इसके विपरीत सच्चाई ये है कि मक्का में इस्लाम के प्रारम्भिक काल में जिन लोगों ने इस्लाम धर्म स्वीकार किया उन पर इस्लाम धर्म स्वीकार करने के अपराध में अत्याचारियों ने जुल्म के ऐसे—ऐसे पहाड़ तोड़े कि जिस पर इन्सानियत आज भी शर्मिन्दा है आइये प्रस्तुत है उसकी झलकियाँ[1]।

इरादे की ताक़त, अज़्म, दृढ़ता व उग्रता इन्सान के असली जौहर हैं और बधाई के पात्र हैं, लेकिन उन्हीं विशेषताओं का रुख जब बदल जाता है तो वह कठोर हृदयता, निर्दयता, दरिन्दगी और बर्बरता का रूप धारण कर लेते हैं। इस्लाम जब आहिस्ता—आहिस्ता फैलना शुरु हुआ और हज़रत मुहम्मद (सल्ल0) और कुछ बड़े सहाबा (रज़ि0) को उनके क़बीले ने अपने सुरक्षा घेरे में ले लिया तो कुरैश का गुस्सा चहुँओर से सिमट कर उन ग़रीबों पर फूटा जिनका कोई यार व मददगार न था। उनमें कुछ दास व दासियाँ थीं, कुछ प्रवासी थे जो एक दो पुश्त से मक्का में आ—जा रहे थे और कुछ कमज़ोर क़बीलों के आदमी थे जो किसी प्रकार की सत्ता व सम्मान नहीं रखते थे। कुरैश ने उनको इस तरह सताना शुरु किया कि बर्बरता व अत्याचार के इतिहास में उसका उदाहरण प्रस्तुत करना कुरैश के अद्धैत (यक्ताई) का अपमान है।

ये आसान था कि मुसलमानों के अस्तित्व को सरज़मीने अरब से एक बार में मिटा दिया जाता। लेकिन कुरैश के इन्तेक़ाम का नशा उससे उतर नहीं सकता था। मुसलमान यदि अपने धर्म पर स्थिर रह कर मिट्टी में मिला दिये जाते तो उसमें जितनी कुरैश की प्रसंशा होती उससे अधिक उन असहायों की संयमता व दृढ़ता की तारीफ होती। कुरैश की शान उस समय क़ायम रह सकती थी जब ये लोग इस्लाम के पथ से पलट कर कुरैश के धर्म में आ जाते या शायद उनको मुसलमानों की संयमता की परीक्षा लेना और उन्हें पुरुस्कृत करना स्वीकार्य था।

कुरैश में ऐसे लोग भी थे जिनका दिल सचमुच इस हालत पर जलता था कि उनकी मुद्दतों का बना बनाया कारख़ाना तहस—नहस हो रहा है। उनके बाप—दादा का अपमान किया जा रहा है। आदर व सम्मान योग्य भगवानों की महानता मिटाई जा रही है। ये लोग सिर्फ हसरत व अफ़सोस करके रह जाते थे और कहते थे कि कुछ नासमझ लोगों के दिमाग़ चल गए हैं। उत्बः, आस बिन वाइल आदि उसी प्रकार के लोग थे। लेकिन अबूजहल, उमय्या बिन ख़ल्फ आदि का स्तर उससे अधिक ऊँचा था।

मुसलमानों पर अत्याचार के तरीक़े

बहर हाल कुरैश ने दमन और अत्याचार के अध्याय लिखने शुरु किये। जब ठीक दोपहर हो जाती, तो वह ग़रीब मुसलमानों को पकडते। अरब की तेज़ धूप रेतीली ज़मीन को दोपहर में जलता तवा बना देती है। वह उन निर्धनों

---

1 संकलन कर्ता टिप्पणी।

को उसी तवे पर लिटाते, छाती पर भारी पत्थर रख देते थे कि करवट न बदलने पाएं। बदन पर गर्म बालू बिछाते। लोहे को आग पर गर्म करके उससे दागते। पानी में डुबकियां देते। ये मुसीबतें यद्यपि सभी बेबस मुसलमानों पर आम थीं लेकिन उनमें जिन लोगों पर कुरैश ज़ियादा मेहरबान थे उनके नाम ये हैं।

हज़रत ख़ब्बाब बिन अरत (रज़ि0)

ये तमीम क़बीले से थे। अज्ञानता काल में दास बनाकर बेच दिये गए थे। उम्मे अम्मार ने ख़रीद लिया था। जब इस्लाम लाए तो कुरैश ने तरह–तरह की तकलीफें देनी शुरु की। एक दिन कोयला जला कर ज़मीन पर बिछाया, जब चित लिटाया तो एक व्यक्ति छाती पर पैर रख रहा है कि करवट बदलने न पाएं। यहाँ तक कि कोयले पीठ के नीचे पड़े–पड़े ठण्डे हो गए। हज़रत ख़ब्बाब (रज़ि0) ने मुद्दतों बाद जब ये पीठ हज़रत उमर (रज़ि0) को दिखाई तो सफेद दाग़ की तरह बिल्कुल सफेद थी[1]। हज़रत ख़ब्बाब पहले लोहारी का काम करने थे। इस्लाम लाए तो कुछ लोगों के ज़िम्मे उनका बक़ाया था। माँगते तो जवाब मिलता जब तक मुहम्मद (सल्ल0) का इन्कार न करोगे, एक कौड़ी भी न मिलेगी। ये कहते कि नहीं जब तक तुम मर कर फिर जियो नहीं (बुख़ारी)।

हज़रत बिलाल (रज़ि0)

ये वही हज़रत बिलाल हैं जो मुअज़्ज़िन के उपमा से प्रसिद्ध हैं। हब्शी वंशीय और उमय्या बिन ख़ल्फ के गुलाम थे। जब ठीक दोपहर हो जाती तो उमय्या उनको जलती बालू पर लिटाता और पत्थर की चट्टान सीने पर रख देता कि हिल–डुल न सकें। उनसे कहता कि इस्लाम से फिर जाओ अन्यथा ऐसे ही घुट–घुट कर मर जाओगे लेकिन उस समय भी अहद–अहद का शब्द निकलता। जब ये किसी प्रकार भी डगमग न हुए तो गले में रस्सी बाँधी और बदमाश लड़कों के हवाले किया। वह उनको शहर के एक छोर से दूसरे छोर तक घसीटते फिरते थे लेकिन अब भी वही रट थी "अहद–अहद"।

हज़रत अम्मार (रज़ि0) और उनका परिवार

हज़रत अम्मार (रज़ि0) यमन के रहने वाले थे। जब ये इस्लाम लाए तो कुरैश उनको जलती हुई ज़मीन पर लिटाते और इस क़दर मारते कि बेहोश हो जाते। उनके माँ–बाप के साथ भी यही व्यवहार किया जाता था।

हज़रत सुमय्या (रज़ि0) हज़रत अम्मार (रज़ि0) की माँ थीं। उनको अबू जहल ने इस्लाम लाने के जुर्म में बरछी मारी जिससे वह शहीद हो गईं।

हज़रत यासिर (रज़ि0) हज़रत अम्मार (रज़ि0) के पिता थे ये भी काफिरों के हाथों कष्ट उठाते–उठाते इस जहाँ से कूच कर गए।

हज़रत सुहैब रूमी (रज़ि0)

जब ये आप (सल्ल0) के हाथों इस्लाम लाए तो इस अपराध में कुरैश इनको इतना मारते और कष्ट देते कि उनके होश व हवास गुम हो जाते थे। जब उन्होंने मक्का को छोड़ना चाहा तो कुरैश ने कहा कि अपनी कुल सम्पत्ति छोड़ दो तो यहाँ से जा सकते हो तो उन्होंने इसे सहर्ष स्वीकार कर लिया।

हज़रत अबू फकीह (रज़ि0)

ये सफवान बिन उमय्या के दास थे। इनके इस्लाम के बारे में जब उमय्या को मालूम हुआ तो उनके पैर में रस्सी बाँधी और लोगों से कहा कि इसे घसीटते हुए ले जाओ और तपती हुई ज़मीन पर लिटा दो। एक गबरीला रास्ते से गुज़र रहा था। उमय्या ने अबू फकीह (रज़ि0) से कहा "क्या तेरा खुदा यही तो नही है" उन्होंने कहा "मेरा और तेरा दोनों का खुदा अल्लाह है"। इस पर उमय्या

---

1 तब्क़ात इब्ने साद जिल्द 3 तज़करा–ए–ख़ब्बाब रज़ि0।

ने इस ज़ोर से उनका गला घोंटा कि लोग समझे दम निकल गया। एक बार उनके सीने पर इतना भारी बोझल पत्थर रख दिया कि उनकी ज़बान निकल पड़ी।

हज़रत लुबीनः (रज़ि0)

ये बेचारी एक दासी थीं। हज़रत उमर (रज़ि0)[1] उस अभागिन को मारते–मारते थक जाते तो कहते थे कि मैंने तुझको दया के आधार पर नहीं बल्कि इस वजह से छोड़ दिया है कि मैं थक गया हुँ। वह बड़ी दृढ़ता से उत्तर देतीं कि यदि तुम इस्लाम न लाओगे तो अल्लाह उसका बदला लेगा।

इसी प्रकार हज़रत जनीरः (रज़ि0) हज़रत उमर (रज़ि0) के घराने की दासी थीं और इस कारण हज़रत उमर (रज़ि0) अपने इस्लाम से पहले उनको जी भर के मारते। अबू जहल ने उनको इतना मारा कि आँख की रौशनी चली गई।

हज़रत नहदियः और उम्मे अबस (रज़ि0) ये दोनों भी दासी थीं और इस्लाम लाने के अपराध में कठोर से कठोर कष्ट झेलती थीं।

हज़रत अबू बक्र (रज़ि0) की महानता का यह पहला दौर है कि उन्होंने उन पीड़ितों में से अधिकतर की जान बचाई। हज़रत बिलाल (रज़ि0) हज़रत आमिर बिन फुहैर हज़रत लुबीनः (रज़ि0) हज़रत जनीरः (रज़ि0), हज़रत उम्मे अबस (रज़ि0) सभी को भारी- भारी दामों में खरीद कर आजाद कर दिया। ये लोग वह थे जिनका कुरैश ने शारीरिक उत्पीडन किया।

हज़रत उस्मान (रज़ि0) जो बडी आयु वाले और सम्मानित व्यक्ति थे। जब इस्लाम लाए तो दूसरों ने नहीं स्वयं उनके चचा ने रस्सी से बाँध कर मारा। हज़रत अबूज़र (रज़ि0) जब मुसलमान हुए और काबा में अपने इस्लाम का ऐलान किया तो कुरैश ने मारते–मारते उनको लिटा दिया। हज़रत ज़ुबैर बिन अन्नान (रज़ि0) जब इस्लाम लाए तो उनके चचा, उन्हें चटाई में लपेट कर उनकी नाक में धुआँ देते थे। हज़रत उमर (रज़ि0) के चचा ज़ाद भाई हज़रत सईद बिन ज़ैद (रज़ि0) जब मुसलमान बने तो हज़रत उमर (रज़ि0) ने उनको रस्सियों से बाँध दिया।

लेकिन ये समस्त अत्याचार, ये जल्लादों जैसी निर्दयता, ये भयोत्पादक हिंसा, एक भी मुसलमान को सत्य मार्ग से ढिगा न सकी। एक इसाई इतिहासकार ने सौ फीसद सच लिखा है[2]:

"इसाई इसको याद रखें तो अच्छा हो कि मुहम्मद (सल्ल0) के सद्व्यवहार ने वह इस्लाम का नशा अपने अनुयाइयों में पैदा किया कि जिसको ढूँढना हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के प्रारम्भिक अनुयाइयों में बेकार है। जब ईसा अलैहिस्सलाम को सूली देने के लिए ले जाया गया तो उनके पैरोकार भाग गए, उनका धार्मिक नशा जाता रहा और अपने पेशवा को मौत के पंजे में गिरफ्तार छोड़ कर चल दिये, इसके उलट मुहम्मद (सल्ल0) के अनुयाई अपने पीड़ित सन्देष्टा के इर्द–गिर्द खड़े दिखाई दिये और आप की रक्षा में अपने प्राण संकट में डाल कर समस्त शत्रुओं पर आप (सल्ल0) को भारी कर दिया'।

---

1 हजरत उमर (रजि0) उस समय तक मुसलमान नहीं हुए थे।

2 अपालोजी गाडफरी मेगन्स तर्जुमा उर्दू पृष्ठ 66–69, प्रकाशित, बरेली 1873।

❑❑❑❑

अनुरोध

उन पाठकों से जिन का चन्दा बाकी है सविनम्र अनुरोध है कि वह अपना चन्दा भेजकर सहयोग दें।

धन्यवाद

पहली किस्त

आइये हम सब मिलकर जीना सीखें

–मौलाना सैय्यद अब्दुल्लाह हसनी नदवी   अनु0– नजमुस्साकिब अब्बासी नदवी

नोट : ये भाषण अखिल भारतीय मानवता सन्देश फोरम अभियान के अध्यक्ष हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी की अध्यक्षता में डॉ0 राजेन्द्र स्वरूप ऑडिटोरियम सिविल लाइन्स कानपुर में आयोजित सभा में दिया गया जिसमें ग़ैर मुस्लिम बुद्धिजीवियों की बहुत बड़ी संख्या थी और हाल पूरा खचाखच भरा हुआ था। इस भाषण को अब्दुल्लाह प्रतापगढ़ी ने टेपरिकार्डर द्वारा सुरक्षित करके नकल किया है।

मेरे दोस्तो, बुजुर्गों और सभा में आए हुए सम्मानित श्रोता जनों! अभी आप इतनी देर से अच्छी–अच्छी बातें सुन रहे हैं और ये बात सबको अच्छी लगती है कि अच्छी बातें कही जाएं, अच्छी बातें सुनी जाएं और अच्छे लोग सुनें तो अच्छा ही अच्छा है मगर अच्छा कहना और बात, और अच्छा करना और बात है। भला कहना और बात है और भला करना और बात है। कहना तो बहुत आसान है मगर आजकल परिस्थितियाँ ऐसी हैं कि कहना भी आसान नहीं। तो कम से कम ऐसा तो हो ही रहा है कि अच्छा कहा जा रहा है और यहाँ अच्छे का तात्पर्य ये है कि कहा जा रहा है। अपने में तो सब अच्छा कहते हैं और उनको अच्छा कहा जाता है। उनके मानने वाले उनकी दाद देते हैं वाह–वाह, बहुत अच्छी बात कही है। लेकिन बात ये है कि आपके क्षेत्र के बाहर वाले आपको अच्छा कहें तो ये एक अच्छा लक्षण है।

मेरे बुजुर्गो, दोस्तो! ये जो दौर हमारा है उसमें दो चार बड़ी कठिनाईयाँ आन पड़ी हैं, जिनको आसान आप ही कर सकते हैं। क्योंकि कठिनाई भी आप ही लाए हैं, तो जो कठिनाई लाता है वही उसको हल भी कर सकता है। वह कठिनाईयाँ ये हैं कि पहले मामला यह था कि अज्ञानता थी। बेचारे अनपढ़ होते थे, सीधे, सादे होते थे। लेकिन आज कल अज्ञानता पढ़ लिख गई है। इसलिए आज कल जो पढ़े लिखे नहीं हैं, उनको समझाना बहुत कठिन है।

"पहली समस्या"

पहले तो बहुत आसान था। एक आदमी सीधा सादा होता था। आपने समझाया उसने मान लिया। लेकिन आज हरेक व्यक्ति इतना समझदार है कि उसको समझाना बड़ा मुश्किल है। तो ये सारे मुश्किल काम हम लोग लेकर चल रहे हैं। मामला बड़ा गम्भीर है। इसीलिए आप देखते होंगे कि कभी इतिहास में ऐसा हुआ ही नहीं कि एक पढ़ा–लिखा डॉक्टर किसी का गुर्दा निकाल कर बेच ले और इंजीनियर पूरा–पूरा पुल खा जाए और सभी के सभी लोग नदी में डूब जाएं। ये मेरे सामने की घटना है। नदवा के सामने जब नया पुल बन रहा था। मैं उस समय पढ़ता था। छोटा सा था गुज़र रहा था। पुराना पुल तोड़ा जा रहा था। किसी इंजीनियर ने क्या किया, मुझे नहीं मालूम। मगर मेरे सामने पूरा पुल बैठ गया और सैकड़ों मजदूर उसी समय पानी के अन्दर चले गए। तो आजकल की अज्ञानता विचित्र शैली की है। और मैं तो इस क्षेत्र का व्यक्ति नहीं हूँ लेकिन मेरे एक मित्र एम0बी0ए0 किये हुए हैं। उन्होंने बताया कि एम0बी0ए0 में ये पढ़ाया जाता है, वह पढ़ाया जाता है। तो मैंने उनकी बात सुन लेने के बाद कहा कि ये सब पब्लिक को बेवकूफ बनाने का एक फंडा है और देखने में एक डिग्री है।

मैं जहाँ से गुज़रता हूँ, वहाँ बड़े–बड़े बोर्ड और पोस्टर लगे हुए हैं बल्कि अब तो हर जगह लग गए हैं बी0बी0ए0, एम0बी0ए0, बी0सी0ए0, पता नहीं क्या–क्या लिखा रहता है उस पर, तो आजकल अज्ञानता इतनी पढ़–लिख गई है कि उनको कैसे समझाया जाए ये एक बड़ी समस्या है। हमारे मध्य बुद्धिजीवी लोग बैठे हुए हैं ये सोचें कि हमने बातें तो बड़ी अच्छी कर लीं लेकिन ये जो पढ़े–लिखे लोग बैठे हुए हैं उनको समझाएँ कैसे? एक समस्या ये हो गई।

"दूसरी समस्या"

दूसरी समस्या ये है कि इस समय फनकारी का दौर है। चहुँओर कलाकारी है और ये इतनी बढ़ गई है कि जो सिनेमा में काम करने वाले लोग हैं उनकी अदाकारी प्रत्येक के मस्तिष्क में घुस गई है। ये अन्दर से बड़े काले, ऊपर से बड़े अच्छे। मैं ये ऐसे ही नहीं कह रहा हूँ। उनमें से जो अन्दर से निकल कर आते हैं, वह कालिमा (स्याही) से बाहर आकर कहते हैं कि अन्दर मत जाना वहाँ "अन्धेरा हो रहा है बिजली की रौशनी में"। ये देखने में बड़े भले मालूम होते हैं, बड़े खुशगवार मूड में दिखाई देते हैं। ऐसा आभास होता है कि उनके दिल की हर कली खिली हुई है। हरदम हँस रहे हैं। हर व्यक्ति लालच से देखता है कि काश! ये जीवन मुझे मिला होता। लेकिन यदि सच मालूम हो जाए तो कहते कि काश! मुझे ऐसा जीवन कभी न मिलता। तो ये जो बातें हैं, ऐसी ही नहीं हैं। ये बातें विचारणीय हैं। ये बातें हमारे अन्दर बढ़ती चली जा रही हैं, पैदा होती चली जा रही हैं। यहाँ तक कि ये एक्टिंग इधर भी आ गई है कि हम जब भाषण देते हैं तो मालूम होता है कि हम से अच्छा बोलने वाला कोई नहीं। बड़ी बढ़ियां–बढ़ियां बातें करेंगे, बड़े उम्दा–उम्दा प्लान बनाएँगे कि मालूम होगा कि इनसे अच्छा बोलने वाला, इनसे अच्छा समझने वाला कोई पैदा ही नहीं हुआ। और ये मैं अपनी बात नहीं कर रहा हूँ, ये हज़रत मुहम्मद (सल्ल0) ने भी एक अवसर पर कहा कि एक व्यक्ति आया जो बड़ी उत्कृष्ट शैली में बातें कर रहा था लेकिन आप (सल्ल0) ने कहा "उसके हृदय में कालिमा (स्याही) के अतिरिक्त कुछ नहीं" कि देखने में बड़ा अच्छा चेहरा कि देखें तो लोग उसके प्रताप से भय खाएँ, सुनें तो लोग मदहोश हो जाएं, लेकिन आप (सल्ल0) ने कहा कि उसके दिल में कालेपन के अतिरिक्त कुछ नहीं केवल बातें हैं, ज़बानी जमाखर्ची है। अन्दर कुछ भी नहीं है। और ये आप (सल्ल0) ने आखिरी दौर की निशानी बताई थी कि एक दौर ऐसा भी आएगा।

"बुद्धि का उपयोग"

मेरे भाइयो और दोस्तों! पहले तो हम लोग अपनी बुद्धि ठीक करें और हर व्यक्ति अपनी जगह पर करे। बुद्धि का उपयोग देखिये, एक बात सटीक दो–दो चार की तरह है कि अल्लाह मियाँ ने हमको जितनी चीजें दी हैं, कहा है कि उनका उपयोग करो यदि उपयोग नहीं करेंगे तो वह चीज़ बेकार हो जाएगी। आँख यदि बन्द रखें दो–चार महीने, दो–चार साल में तो आपकी आँख की रौशनी कम हो जाएगी। हाथ यदि उठाए रहें या लटकाए रखें या लेटे रहें पलंग पर दो–चार महीने तो आप बेकार हो जाएंगे। इसलिए ऊपर वाले ने कहा है कि चलो, और ऊपर वाले का मामला भी बड़ा अजीब है कि आदमी जब चलता है तो हाथ हिलते ज़रूर हैं इस प्रकार स्वयं व्यायाम हो रहा है लेकिन उसके साथ ये भी कहा है कि उसका प्रयोग भी सही करो। अब हाथ का इस्तेमाल दो तरह से है एक तो ये कि आप दूसरों को मारें, हत्या करें और दूसरे ये कि जो परेशान हाल हैं उनकी सहायता करें हाथ से। तो हाथ के दो

इस्तेमाल हुए इसी प्रकार हर चीज़ के दो इस्तेमाल हैं।

बुद्धि का उपयोग भी सही होना चाहिये। बुद्धि के तीन प्रकार हैं। एक धुर्तता, दूसरी मूर्खता और तीसरी बुद्धिमानी। दिमाग जब बहुत आगे चलने लगता है जैसे आज कल चल रहा है कि इनको इधर पलटा, उनको उधर ढकेला, इनको जेल भेजा, उनको ये किया तो इसे धुर्तता कहते हैं जैसे आजकल के सियासी बाजीगर कर रहे हैं। और दूसरी मूर्खता है। मूर्खता उन लोगों की है जिन लोगों ने अपनी बुद्धि को डिबिया में बन्द कर दिया है। वह उसका उपयोग ही नहीं करते। हर चीज में बहुत बड़े लालबुझक्कड़। लेकिन कुछ चीजों मे महामूर्ख हैं। जैसे कुर्आन में उनको कहा गया है कि "परलोक (आख़िरत) के ज्ञान के बारे में कि मरने के बाद कहीं और जाना है, उनकी अक़्ल पंचर हो गई है, वास्तव में वह शक में पड़े हुए हैं बल्कि अन्धे और बहरे हो गए हैं"।

ये विचित्र स्थिति है, न मक्कारी है, न बेवकूफी है, न अक़्लमन्दी है बल्कि अक़्ल का सही इस्तेमाल है। उसका उदाहरण देता हूँ जिससे आप समझ जाएंगे, जैसे ये डेस्क है, इसपर टेक लगाए हुए हैं, ये लकड़ी का बना हुआ है और यदि मैं कहूं कि ये स्वयं बन गया है, पेड़ कटा, और भागता हुआ चला आया, इस हाल में फिट हो गया और मैं खड़े होकर बोलने लगा तो कोई सच नहीं मानेगा और सच मानना भी नही चाहिये, ये बेवकूफी की बात है। लेकिन यदि कोई कहे कि बढ़ई ने बनाया है, तो उसमें कोई शक नहीं है। लेकिन बढ़ई काला था, लम्बा था, गोरा था, किस बिरादरी का था कोई नहीं बता सकता जब तक बढ़ई से प्रत्यक्ष रूप से भेंट न हुई हो। तो एक बात तो ये है कि बनाने वाले को समझ लेगें कि बढ़ई है बनाने वाला, लेकिन कैसा है उस पर अक़्ल लगाई तो काले को गोरा करेंगे, गोरे को काला करेंगे, लम्बे को छोटा करेंगे छोटे को लम्बा करेंगे और यदि चोर है तो शाह करेंगे, शाह है तो चोर करेंगे। तो इसकी भी समझने की आवश्यकता है कि बुद्धि का प्रयोग कहाँ करना है। तो मेरे भाइयो! ये बुद्धि बहुत महत्वपूर्ण है और इस प्रकार के उदाहरण हमारे सामने हैं लेकिन ध्यान नहीं देते, सोचते नहीं। देखिये आप हम सब जानते है कि हम बैंक में जाएं, पैसा जमा करना है, दस लाख रूपये लेकर जाइये और मैनेजर साहब से दोस्ती भी हो, फिर आप कहें कि रूपये लेकर आया हुँ उसे जमा कर लीजिए तो मैनेजर साहब तुरन्त पूछेंगे कि खाता नम्बर क्या है आपका ? आपने कहा कि खाता तो नहीं खुलवाया, इस पर मैनेजर कहेगा कि जमा कैसे होगा? खाता खुलवाना तो जरूरी है भई, पहले खाता खुलवाइये फिर जितने चाहिये उतने जमा कीजिए। पाँच सौ या पचास लाख जमा कीजिए, खाता खुलवाना तो अनिवार्य है यदि खाता नही खुलवाएगें तो जमा कैसे करेंगे ?

ये छोटी–छोटी चीजें हैं लेकिन विचारणीय हैं। ये जो विषय है, मैं सोच रहा हूँ कि इसपर कोई बात सामने आई नही, लेकिन हमारी जिम्मेदारियाँ है क्या ? बातें तो बहुत अच्छी हुई लेकिन हमारी जिम्मेदारियाँ क्या हैं ? और हम को क्या करना है ? तो मैंने तो इशारे किये हैं कि यही जिम्मेदारियाँ हैं कि जब तक ये न करेंगे बात नहीं बनेगी, जैसे हम यहाँ आए और आप वहां बैठे हुए हैं हम से बहुत दूर, और हम कहें आप से कि आइये साहब हाथ मिला लीजिए और वह वहीं से बढ़ाए और हम यहाँ से हाथ बढ़ाए तो कभी हाथ नही मिल पाएगा। कुछ आप चलकर आइये, कुछ हम चलकर आएं, तब हाथ मिलेगा। जब हाथ मिलेगा तो स्पष्ट है कि यदि मेरा हाथ ठण्डा होगा तो आपको महसूस होगा आ

आपका हाथ गर्म है तो मुझे महसूस होगा। इसपर मैं पूछूँगा कि आपकी ये गर्मी क्यों ? और आप पूछेंगे कि आपकी ये सर्दी क्यों ? और आगे दोनों का मामला होगा, फिर दोस्ती हो जाएगी। एक दूसरे को जानें–पहचानें फिर मसला हल होगा। तो पहले हाथ तो मिलाएं, पास तो आएं, उसके बाद बातें बहुत होगी लेकिन हाथ तो मिलाएं।

"पहले हम इन्सान हैं"

ऐसे में हमारा प्रथम दायित्व यह है कि हम इन्सान हैं या नहीं, ये तय करना है। दूसरी चीजों को मापने का Measurment होता है वैसे इसके लक्षण अभी बताता हूँ कि मानव के लक्षण क्या हैं ? जब हमारे सामने कोई आए तो हम अपने को तुरन्त चेक करें कि मन प्रसन्न हुआ या दुखी हुआ। अगर खुश हुआ तो इन्सान हैं और यदि दुखी हुआ, ज़रा मुँह बनाया कि हमारी पार्टी का तो नहीं है, ये पीले कपड़े पहने है, ये अमुक कपड़े पहने है तो आपके इलाज की ज़रूरत है और अल्लाह न करे ऐसा मामला हो गया कि आपने देखा उसको, तो बड़बडाने लगे कि पता नहीं कहाँ से आ गया ? और उसके बाद जब सामने आया तो अरे आइये, पधारिये, ये कहाँ की नैतिकता है ? भाई! देखते ही पहले खुशी महसूस करें और अगर मामला, जैसे आपने सुना होगा कि एक सौ छः डिग्री बुखार हो जाए तो दिमाग चल जाता है। यदि हम किसी को देखकर बड़बड़ाने लगें बुराई करने लगें, ये ऐसा है, वह ऐसा है, तो भाई फिर उसका जवाब नहीं दिया जाता बल्कि कहा जाता है कि भाई जों ये बकवास कर रहा है, इसको हास्पिटल में ले जाओ और ले जाकर दवा दिलाओ, ठीक हो जाए, फिर ले आना। तो ऐसी आवश्यकता इस बात की है कि हम दूर रहकर कैसे समस्याओं को सुलझाएंगे ? जब तक हम बाहर निकल कर नहीं आएंगे, एक दूसरे को समझेंगे नही हल नहीं निकलेगा। और ये अलग–अलग रहने वाली बात, लोग कहते हैं कि एकता–एकता। पहले ये समझें कि एकता कहते किसको हैं ? जब बच्चे छोटे होते है, दस साल, पन्द्रह साल के तो एक ही कमरे में रहते हैं, खेलते हैं, लड़ते हैं, लेकिन उसी में मस्त रहते हैं, जब वह बड़े हो जाएं, बालिग हो जाएं, विवाहित हो जाए, घर वाले कहें कि इसी कमरे में रहो इसलिए की यदि कमरे से बाहर जाओगे तो एकता टूट जाएगी अरे भाई, बाहर रह कर ही एकता को बल मिलेगा इसलिए कि तुम्हारी शादी हो गई है तो तुम्हरा कमरा अलग। और अलग रहोगे तो एकता स्थापित होगी। यदि एक कमरे में रहोगे तो फिर हर दम लड़ाई होगी। जैसे लोग कहते हैं कि अरे चूल्हे की समस्या है, तो चूल्हा अलग करने से एकता अधिक होती है। एक चूल्हा से लड़ाई ज्यादा होती है इसलिए कि इनको ये पसन्द है उनको ये पसन्द है। सबकी पसन्द अलग–अलग है। जैसे आपको पसन्द है मसूर की दाल। उनको पसन्द है मलका मसूर, उन्होंने कहा मलका पकाइये और उन्होंने कहा काली पकाइये। झगड़ा शुरु हो गया, इस पर उन्होंने कहा कि अलग कर लीजिए चूल्हा। आप आराम से मलका पकाइये, हम काली पकाएं। तो समस्या ऐसी ही है। लेकिन करीब रहना पड़ेगा। अब अलग होना उसकी आवश्यकता है।

इसलिए सबसे पहले हमारी जिम्मेदारी है कि हम इन्सान बन जाएं, हमारे अन्दर इन्सानियत पैदा हो जाए। हम मानव जाति से प्रेम करने लगें, बस। क्यों कि हम सबको बनाने वाला एक ही है, ऊपर वाले ने कहा है, उसके सन्देष्टा (पैगम्बर) ने बताया है कि "समस्त सृष्टि अल्लाह का कुनबा है और अल्लाह को सबसे प्यारा वह है जो उस कुनबे के साथ अच्छा मामला करे"।

शेष पृष्ठ.....34 पर

सहायक सम्पादक सच्चा राही

मुहम्मद हसन अंसारी अल्लाह की रहमत में

डॉ0 हारून रशीद सिद्दीकी

31 दिसम्बर जुमे की रात को 9:30 बजे रात हमारे प्रिय मित्र साथी व सहायक जनाब मुहम्मद हसन अंसारी ने अपने रब के निर्णयानुसार हमारा साथ छोड़ कर अपने रब की रहमत में जा बसे, हम सब अल्लाह ही के हैं और हम सब को उसकी ओर अवश्य लौटना है। वह 71 वर्ष के थे परन्तु उनका साथी तो उनसे अधिक बूढ़ा है जिसे उनकी जुदाई का दुख उठाना पड़ा।

जनाब मुहम्मद हसन अंसारी मरहूम ने 21 जून 1939 ई0 को सरकौन्डा, जिला सुलतानपुर में जन्म लिया था, प्रारम्भिक शिक्षा स्थानीय पाठशालाओं, स्कूलों में हुई, उच्च शिक्षा बी0ए0, एम0ए0 फिर एल0टी0 की डिग्रियाँ इलाहाबाद विश्वविद्यालय से प्राप्त की, शिक्षण व्यवसाय का चयन किया और बड़े ही सफल शिक्षक सिद्ध हुए। विभिन्न विद्यालयों में प्रधानाचार्य रहे। हर संस्था में प्रिय रहे, सदा उन्नति ने साथ दिया। अन्त में वह जिला विद्यालय निरीक्षक हो गये और इसी पद से 30 जून 1999 को रिटायर हुए।

यद्यपि वह भूगोल विषय में एम0ए0 थे परन्तु वह कॉलेजों के सभी विषयों में निपुण थे। मैंने माहद दारुलउलूम (सिकरौरी) के असातिजा के लिये उनके सात लेक्चर कराए। मैं जुगराफिया विषय पर उनके ज्ञान से बहुत प्रभावित हुआ।

रिटायरमेंट के पश्चात उन्होंने अपने को दीनी व इल्मी सेवाओं के लिये फारिग कर लिया और यह सारी सेवाएं उनकी निः शुल्क अन्तिम साँस तक चलती रहीं। वह सच्चा राही के सहायक सम्पादक पहले ही दिन से बनाए गये, सच्चा राही में उनके लेखों का सहयोग बड़ा ही मूल्यवान रहा, नौ वर्षो तक उनका साथ रहा, हर अंक के लिये उन्होंने कुछ पेज का मैटर बड़ी ही पाबन्दी से पहुँचाया। यही नहीं वह सच्चा राही के प्रसारण में भी बराबर भाग लेते रहे वह उर्दू, अँग्रेज़ी से हिन्दी में अनुवाद करने में निपुण थे। अधिकतर उनके लेख अनुवाद के होते थे।

मुहम्मद हसन अंसारी मरहूम शिक्षण प्रणाली में बड़ा ज्ञान रखते थे नदवे के मकातिबे शहर के शिक्षकों के प्रोगामों में उनके लेक्चर बड़े ही महत्वपूर्ण होते थे।

वह अपने दौर के सभी बड़े उलमा से बड़ी आस्था रखते थे विशेषकर मौलाना अब्दुल माजिद दरियाबादी, क़ारी मुहम्मद सिद्दीक साहब बाँदवी, और मौलाना अली मियाँ से तो वह बड़ा ही प्रेम रखते थे। मौलाना की कई किताबों का हिन्दी में अनुवाद किया, और कभी भी कोई शुल्क तो क्या आने जाने का किराया तक न लिया। अल्लाह ने उनको आख़िरत कमाने की बड़ी तौफीक दी थी।

दर्मियाना क़द, सांवला रंग, कोट पतलून पर मौसम के अनुसार अच्छी टोपी, उस पर नूरानी दाढ़ी, हँस मुख मुखड़ा मेरे सामने है। लगभग हर मास नदवे आते। सच्चा राही पर बात चीत रहती और अपना लेख देकर चले जाते। कभी चाय पी लेते तो कभी माजिरत कर देते। कितने अच्छे साथी का साथ छूट गया।

अपने पीछे पाँच बेटे और दो बेटियाँ छोड़ गये। छोटी बेटी को छोड़ कर सभी के घर बस चुके हैं, सभी उच्च टेक्निकल शिक्षा से सुसज्जित हैं, अच्छा कमाते, अच्छा खाते हैं अल्लाह सब की मदद फरमाए, मेरी भी मदद फरमाए और मरहूम की बाल बाल बख़्शिश फरमाए, आमीन।

शेष पृष्ठ.....20 पर

दीनदारी की पहचान

—मौलाना मुहम्मद हमजा हसनी नदवी

दीन दारी सिर्फ इसी का नाम नहीं है कि नमाज़ पढ़ ली रोज़ा रख लिया और वज़अ, कतअ (सूरत शक्ल) शरई बना ली बल्कि नमाज़ रोज़ा और वज़ा क़ता शरई होने के साथ अपनी निजी और मुआशरती (सामाजिक) ज़िन्दगी और क़ौमी ज़िन्दगी के हर मुआमले में भी देखें कि अल्लाह का क्या हुक्म है और दीन के लिये मुफ़ीद क्या है और मुज़िर क्या है। इस्लाम सिर्फ रोज़ा नमाज़ का नाम नहीं बल्कि इस्लाम ज़िन्दगी के हर शोबे (विभाग) में अपना एक मुकम्मल निज़ाम रखता है और अपने मानने वालों से यह मांग करता है कि वह उस के हुक्म पर अमल पैरा हों, जिस तरह नमाज़ रोज़ा ज़कात और हज में इस्लामी अहकामात पर अमल करना ज़रूरी है, इस तरह तिजारत, मुआमलात, सियासी उमूर, अदालत, दफ़ातिर के सिलसिले में भी उसके क़वानीन व अहक़ामात पर अमल पैरा होना ज़रूरी है। अकसर यह देखा गया है कि बहुत ही इबादत गुजार परहेज़गार ज़िक्र व फ़िक्र में डूबे हुए हैं लेकिन जब कोई दुन्यावी मुआमला पेश आया तो सारे इस्लामी अहक़ामात भुला कर अपने नफ्स और दुनियावी मुनाफे की ख़ातिर उस रास्ते पर चल पड़े जो सरासर इस्लामी तरीके से मुतजाद (विलोम) बल्कि मुतआरिज (टकराने वाला) होता है। रसूलुल्लाह (सल्ल0) ने जहाँ हम को नमाज़ पढ़ने और रोज़ा रखने का तरीक़ा सिखाया वहीं यह भी बताया है कि एक मोमिन को कैसे तिजारत करनी चाहिये, कैसे खेती करनी चाहिये। एक बात यह भी याद रखनी चाहिये कि दीनदारी यह नहीं कि खुद दीन के अहकामात पर अ़मल करें, बल्कि सच्ची दीनदारी यह है कि दीनी अहकामात पर खुद अमल पैरा होने के साथ साथ अपने ख़ानदान अपनी औलाद, अपने अहबाब को इस्लाम के अहकामात पर अमल करने की तल्क़ीन करता रहे और उसके लिये पूरी कोशिश करे। कसरत से यह देखा जा रहा है कि माँ—बाप बड़े ही दीनदार और मुत्तक़ी (संयमी) इबादत गुजार और इस्लाम के अहकामात पर जितने चलने वाले हैं वहीं उनकी औलाद उतनी ही ज़्यादा मग़रिबियत ज़दा और इस्लाम से दूर है। आखिर उस का क्या सबब है ? इसका सबब सिर्फ वालिदैन की कोताही है जिसका उ़न को अल्लाह के सामने जवाब देना होगा। आखिर कभी आपने सोचा कि इस्लाम सदियों की मन्ज़िलें तय करता हुआ आप को पहुँचा है। इस्लाम ज़ीना बजीना आप तक पहुँचा। अगर आपके आबा व अजदाद (बाप दादा) भी इसी कोताही में काम लेते जिससे आप ले रहे हैं तो दीन का यह सिलसिला सदियों पहले ही कट जाता। हम तक, आप तक अल्लाह का नाम न पहुँचता। लेकिन अल्लाह तआ़ला का बड़ा एहसान है कि उसने हमारे बाप—दादा को यह तौफीक़ दी कि उन्होंने इस अमानत को हम तक पहुँचाया। अब यह हमारी जिम्मेदारी है कि अल्लाह तआला की इस अमानत को आने वाली नस्ल के सिपुर्द करें और इस नस्ल को इस क़ाबिल बनाएं कि वह इस अमानत को उठाने के लायक़ हो। अगर हम यह नहीं करेंगे तो आखिरत की जवाबदेही से हम किसी तरह बच नहीं सकते चाहे हमारे पास इबादतों और रियाज़तों का खज़ाना ही क्यों न हो।

❑❑❑❑

? आपके प्रश्नों के उत्तर ?

—प्रस्तुति : फौजिया सिद्दीका

—इदारा

प्रश्न : ईदे मीलादुन्नबी मनाना कैसा है ?

उत्तर : इस सिलसिले में हम तफ्सील से बात रख कर फैसला आप पर छोड़ना चाहते हैं। उप महाद्वीप (भारत, बंगलादेश और पाकिस्तान) में ईदे मीलादुन्नबी मनाने का बड़ा रवाज है। यहां बड़े बड़े लीडरों नेताओं और धर्म गुरुओं का जन्म दिन और जयन्ती मनाने का रवाज है, उनको देख कर मुसलमानों के दिल में भी यह भावना उभरी है कि क्यों न हम अपने नबी का उन्हीं की तरह जन्म दिन धूम धाम से मनायें यह मानवीय भावना प्राकृतिक है। यह जन्म दिन यहाँ ज़िन्दा लोगों का भी मनाया जाता है और मरे हुए लोगों का भी। ज़िन्दा लोग खूब दावतें खिलाते हैं और केक काटते है। मरे हुए लोगों की जयन्ती पर खुशियां मनाते हैं, जल्से करते हैं तकरीरें (भाषड़) होती हैं खाते खिलाते हैं, कुछ फलाही काम भी करते हैं। हमारे मुसलमान भाई ईदे मीलादुन्नबी में चिरागां करते हैं, बड़े बड़े जल्से करते हैं रात–रात भर तकरीरें होती हैं, खूब सलात व सलाम पढ़ते हैं, खूब खिलाते पिलाते हैं, खुशियां मनाते हैं वगैरह।

लेकिन जब हम हुज़ूर सल्ल0 की हदीसों पर नजर डालते हैं तो कोई हदीस ऐसी नहीं मिलती जिसमें आपने अपना जन्म दिन मनाया जाने का उल्लेख किया हो या जन्म दिन मनाने का आदेश दिया हो, बल्कि कोई हदीस ऐसी भी नजर से नहीं गुज़री जिसमें आपने अपना जन्म तिथि बताया हो कि मैं फुलां तारीख को पैदा हुआ।

उसके पश्चात हम नहीं पाते हैं कि खुलफाए राशिदीन हजरत अबू बक्र, हज़रत उमर, हज़रत उस्मान, हज़रत अली, हज़रत हसन में से किसी ने भी आप सल्ल0 का जन्म दिन मनाया हो ऐसा तारीखे इस्लाम में या किसी असर में नहीं मिलता, बल्कि किसी भी सहाबी में से हुज़ूर सल्ल0 का जन्म दिन मनाना साबित नहीं। यही नहीं हज़रत इमाम अबू हनीफा, हजरत इमाम मालिक, हज़रत इमाम शाफई, हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल रह0 में से किसी से भी आप का जन्म दिन मनाना साबित नहीं न किसी आयत या हदीस से इन हज़रात ने आप सल्ल0 का जन्म दिन मनाना साबित किया हो।

फिर हम मुसलमानों से भी किसी और बुजुर्ग का जन्म दिन नहीं मनाया जाता, न हज़रत अबू बक्र या हज़रत उमर का न हज़रत उस्मान का न हज़रत अली का न हज़रत हसन का न हजरत हुसैन का, आप किसी भी आलिम से पूछें, जो कुछ मैंने कहा है वह इस का खण्डन न करेगा, इस से यह सिद्ध हुआ कि ईदे मीलादुन्नबी (आप सल्ल0 के जन्म दिन में ईद मनाना) की कोई शरई हैसियत नहीं है, न फर्ज, न वाजिब, न सुन्नत, न सहाबा का तरीका न अइम्म–ए–मुजतहिदीन का अमल।

अजीब बात है कि इस उप महाद्वीप के मुसलमानों में महा पुरुषों (बुजुर्गों) की शहादत या वफात का दिन मनाने का रवाज तो है परन्तु हुज़ूर सल्ल0 के अतिरिक्त किसी बुजुर्ग का जन्म दिन मनाने का रवाज नहीं है। यह भी आश्चर्य जनक बात है कि 12 रबीउल अव्वल को आप (सल्ल0) के जन्म की खुशी धूम धाम से मनाई जाती है जब कि 12 रबीउल अव्वल ही को

आप (सल्ल0) के देहान्त (वफात) का दिन है।

इन सब बातों के बावजूद (होते हुए) हमारे देश में नबी सल्ल0 का जन्म दिन इतनी धूम धाम से मनाया जाता है और ये इतना आम (व्यापक) हो गया है कि अब इसका रोकना सरल नहीं। ऐसी सूरत में आप खुद फैसला करें कि इस व्यापक रवाज के बारे में क्या करना चाहिए।

हमारा अपना अमल यह है कि अब हम इसे रोकते नहीं बल्कि इस में शामिल होकर इसके सुधार की कोशिश करते हैं। हम कहते हैं इस में जो खर्च करो वह अपने भाई के काम आए, जलसे करो उसमें आप सल्ल0 की जीवनी का बयान हो, आप की शिक्षाओं का उल्लेख हो, आप (सल्ल0) की शिक्षाओं के अपनाने की मांग हो, फुजूल खर्ची से बचा जाए। व्यर्थ रौशनी का क्या लाभ ? जरूरत की रौशनी काफी है।

सोचने की बात है अल्लाह के रसूल (सल्ल0) ने अपनी उम्मत को बताया कि तुम को साल मे दो ईदें दी गई हैं ईदुल फित्र और ईदुल अज्हा लेकिन हमने एक ईद अपनी ओर से बढा ली। क्या इसका यह मतलब नहीं निकलता कि हुज़ूर (सल्ल0) की शिक्षाओं में इसकी कमी थी जिस को हमने पूरा किया। प्रिय पाठको और दीनी भाइयो। हुजूर (सल्ल0) को अल्लाह का रसूल माने बिना न ईमान न इस्लाम, आपकी पैरवी और आपकी मुहब्बत के बिना न अल्लाह राजी होगा न आखिरत में नजात होगी इन बातों को दाँतों से पकड़ लें। रही ईदे मीलादुन्नबी, तो उसे मुहब्बत से मनाएं मगर उसमें जो व्यर्थ बातें शामिल हो गई हैं उनकी इस्लाह करें। अन्त में पढे

अल्लाहुम्मा सल्लि अला मुहम्मदिंव व अला आलिही व अस्हाबिही व बारिक व सल्लिम।

प्रश्न : कुछ लोगों का कहना है कि हज़रत हुसैन रजि़0 अगर कूफा का सफर न करते तो कर्बला का दर्दनाक वाकिआ पेश न आता, उनको क्या जवाब दिया जाए?

उत्तर : पहला जवाब तो यह है क्या अल्लाह के लिखे को कोई तदबीर बदल सकती है ? हरगिज़ नही। दूसरा जवाब यह कि हज़रत हुसैन रजि़0 सहाबिये रसूल हैं, नवास–ए–रसूल हैं, जन्नत की बशारत पाए हुए हैं। उनकी दीनदारी में शक करना अपनी आखिरत खराब करना है। उन्होंने जिस बात को हक समझा उस पर जमे रहे। कूफियों ने उनको सैकड़ों खुतूत लिखकर बुलाया, आपने जांच के तौर पर अपने चचा जाद भाई को भेजा जब उनका भी खत कूफ़ा आने के हक़ में आ गया तो आपने सफर का इरादा किया। कूफियों ने दग़ा की। उसको वह भुगतेंगे, हज़रत हुसैन रजि़0 तो नेक नीयत थे। वह यजीद की खिलाफत को तस्लीम नहीं करते थे यह उनका इजतिहाद था, आप अपने इजतिहाद में हक पर थे मगर वह यजीद से टकराना नहीं चाहते थे अल्लाह की मसलहत ने यजीदी फौज से टकरा दिया। आप अपने मौकिफे हक पर कायम रहे, यजीदियों पर यह फरमा कर इतमामे हुज्जत कर दी कि मुझे हिजाज वापस जाने दो, या यजीद के पास जाने दो, या किसी सरहद की ओर जाने दो मगर इब्ने जियाद बद निहाद ने एक न मानी, वह अपने हाथ पर यजीद के लिये बैअत मांगता रहा, आप अपने मौकिफ पर जमे रहे यहां तक कि जालिमों ने अपनी आखिरत बरबाद कर ली। हज़रत से न चूक हुई न गलती, आप अपने इजतिहाद में हक पर थे। जो कुछ आपने किया सही किया उस पर किसी तरह का एतिराज़ सही नही है।

प्रश्न : क्या नाबालिग बच्चा अगर 612 ग्राम चाँदी का मालिक हो तो उसके माल पर ईदुल फित्र का फित्रा और कुर्बानी वाजिब होगी?

उत्तर : नाबालिग बच्चा जिसकी उम्र 15 वर्ष से कम हो न. उसके माल पर जकात है न फित्रा न कुर्बानी, अल्बत्ता अगर उसका बाप मालदार साहिबे निसाब है तो वह अपनी नाबालिग औलाद की ओर से भी फित्रा अदा करेगा।

प्रश्न : क्या कोई औरत भी नबी हुई है ? आपके अक्तूबर 2010 के सच्चा राही में "ख़वातीने इस्लाम" शीर्षक के अन्तर्गत लिखा गया है कि हज़रत मरयम, हजरत मूसा की माँ और हज़रत इस्हाक़ की माँ नबी थीं

उत्तर : ख्वातीने इस्लाम मौलाना अब्दुर्रहमान नग्रामी नदवी ने लिखी है। वह पुराने नदवियों में हैं। वह अच्छा इल्म (ज्ञान) रखते थे, औरतों पर जो कुछ उन्होंने लिखा बहुत अच्छा लिखा इसी लिये उसका अनुवाद पाठकों को प्रस्तुत किया गया। इसी प्रकार इब्नि हज़्म का इल्म भी तस्लीम (स्वीकार) है, परन्तु औरत के नबी होने में इन दोनों की राय (मत) उम्मत के विद्वानों से पृथक है। जम्हूर उलमा (अधिकांश विद्वान) कहते हैं कि कोई औरत नबी नहीं हुई। फरिश्तों से बात करना नुबूवत की दलील (तर्क) नहीं है बल्कि इस में दो शर्तें हैं, एक यह कि फरिश्तों से बातचीत अखिरी नबी हज़रत मुहम्मद (सल्ल0) से पहले हुई हो तो दूसरे जिससे बात हुई हो वह मामूर बित्तब्लीग़ हो (ईश्वर की ओर से धर्म प्रसारण पर नियुक्त हो) हदीस "ला नबीय बअ़दी" के अन्तर्गत हज़रत मुहम्मद सल्ल0 के बाद नुबूवत का दावा करने वाला झूठा है। आप (सल्ल0) से पहले अल्लाह तआला ने पहाड़ों को आदेश दिया, चिड़ियों को आदेश दिया, शहद की मक्खियों को आदेश दिया, हज़रत मरयम से बात की, हज़रत मूसा की माँ को आदेश दिया इनमें से किसी को नबी नहीं कहा जा सकता इसलिये कि इनमें से कोई मामूर बित्तब्लीग़ न था।

सहबानुल हिन्द मौलाना अहमद सईद देहलवी अपनी तफसीर कशफुर्रहमान में सूर-ए-आले इम्रान की आयत 43 के अन्तर्गत ज़मीमा नं0 27 में लिखते हैं "हज़रत मरयम का फरिश्तों से ख़िताब करना नुबूवत की दलील नहीं है क्योंकि बिल इत्तिफाक हज़रत मरयम नबी नहीं थीं अगरचि सिद्दीक़ियत का मरतबा उनको हासिल था और सिर्फ फरिश्तों का हम कलाम होना नुबूवत की दलील भी नहीं है।

मुफ्ती मुहम्मद शफी साहिब ने मआरिफुल कुर्आन सूर-ए-मरयम में आयत नं0 41 के तहत लिखा है :

हज़रत मरयम को खुद कुर्आन शरीफ ने "व उम्मुहू सिद्दीक़ा" का खिताब किया है, जम्हूरे उम्मत के नज़दीक वह नबी नहीं हैं और कोई औरत नबी नहीं हो सकती।

अलमाइदा आयत नं0 70।

इस सिलसिले में एक फ़तवा भी पढ़ लें। जमहूरे उम्मत की तहक़ीक़ यही है कि ख़वातीन में नुबूवत नहीं आई, यह मन्सब रिजाल (मरदों) के लिए ही आया है "वमा अर्सल्ना मिन क़ब्लिक इल्ला रिजालन नूही इलैहिम मिन अहलिल्कुरा" सूर-ए-यूसुफ आयत नं0 109 से यही मुसतफ़ाद होता है (ज्ञात होता है) हज़रत मरयम के लिये क़ुर्आन में सिद्दीक़ा आया है। (मुफ़्ती) नियाज़ अहमद नदवी दारुल इफ़्ता नदवतुल उलमा लखनऊ।

❑❑

मुहम्मद हसन अंसारी.........

मरहूम ने कभी हार्ट रोग का ज़िक्र नहीं किया, परन्तु अल्लाह को यही मजूर था कि वह बिस्तर पर लेट कर किसी के मुहताज न बने। 9 बजे रात को कुछ हार्ट की तक्लीफ हुई और किसी चिकित्सक के पहुँचने से पहले 9:30 बजे वह अल्लाह को प्यारे हो गये। उनकी आप बीती उन्हीं के क़लम से पठनीय है।

❑❑

कुर्आन मजीद के रुमूज़े औक़ाफ़

(कुर्आन में बने संकेत)

हर एक ज़बान के अहले ज़बान जब गुफ़्तुगू करते हैं तो कहीं ठहर जाते हैं, कहीं नहीं ठहरते कभी कम ठहरते हैं कभी ज़्यादा और इस ठहरने और न ठहरने को, बात के सही बयान करने और उसका सही मतलब समझने में बहुत दख़्ल है। कुर्आन मजीद भी इबारत और गुफ़्तुगू के अन्दाज़ में वाके हुई है, इसी लिये अहले इल्म ने उसके ठहरने न ठहरने की अलामतें मुकर्रर कर दी हैं जिनको रुम्ज़े औक़ाफ़े कुर्आन मजीद कहते हैं, जरूरत है कि कुर्आन की लिखावट करने वाले इन रुम्ज़ (संकेतों) को महफ़ूज रखें और वह यह है :—

O **(आयत)** — जहाँ बात पूरी हो जाती है वहाँ छोटा सा दायरा बना दिया जाता है। यह हक़ीकत में गोल ता है जो (O) की सूरत में लिखी जाती है। और ये वकफ़े ताम (पूर्ण विराम) कि अलामत है यानी उस पर ठहरना चाहिये अब ता (O) तो नहीं लिखी जाती छोटा सा दायरा बना दिया जाता है इस को आयत कहते हैं।

م **(मीम)** — ये अलामत वकफ़े लाजिम (ज़रूर ठहरने) कि है इस पर जरूर ठहरना चाहिए अगर न ठहरा जाए तो हो सकता है कि मतलब कुछ का कुछ हो जाए। इस कि मिसाल यूँ समझना चाहिये कि मसलन किसी को ये कहना है कि उठो, मत बैठो जिसमें उठने का हुक्म और बैठने को मना किया गया है तो उठो पर ठहरना जरूरी है अगर ठहरा न जाए तो उठो मत, बैठो, हो जाएगा जिसमें उठने से रोकना और बैठने का हुक्म हो जाएगा और ये कहने वाले के मतलब का उल्टा हो जाएगा।

ط **(तो)**— वक्फ़े मुतलक की अलामत है इस पर ठहरना चाहिये मगर ये अलामत वहाँ होती है जहाँ मतलब पूरा नहीं होता और बात कहने वाला अभी कुछ और कहना चाहता है लिहाज़ा ठहरना न ठहरना दोनों ठीक है।

ج **(जीम)**— वक्फ जाइज़ की अलामत है, यहाँ ठहरना बेहतर और न ठहरना जाएज़ है।

ز **(ज़े)**— अलामते वक्फ़े मुजव्विज़ा की है यहाँ न ठहरना बेहतर है।

ص **(स्वाद)**— अलामत वक्फ़े मुरख्खस की है यहाँ मिला कर पढ़ना चाहिये लेकिन अगर कोई थक कर ठहर जाऐ तो रुख़्सत (अनुमत) है मालूम रहे कि स्वाद पर मिला कर पढ़ना जे कि निसबत ज़्यादा तरजीह रखता है।

صلے यहाँ मिला कर पढ़ना बेहतर है।

ق **(काफ)**—यहाँ न ठहरना बेहतर है।

صل **(सल)**— यहाँ ठहरना बेहतर है और न ठहरना जाएज़ है।

قف **(किफ)**— यहाँ ठहर जाना चाहिए।

س یا سکتہ **(सीन)**— सकते की अलामत है यहाँ थोड़ा ठहर जाना चाहिये मगर साँस न टूटे।

وقفہ **(वक्फह)**— लमबे सकते की अलामत है यानी सीन के मुकाबले में ज़्यादा ठहरें मगर साँस न टूटे।

لا **(ला)**— ये अलामत आयत पर हो तो ठहरना न ठहरना दोनों जाएज़ है लेकिन अगर बीच इबारत में हो तो न ठहरें।

ک **(काफ)**— इस का मतलब है इससे पहले जो ठहरने या न ठहरने का इशारा दिया गया है वही यहाँ भी है।

अहले बैत से अक़ीदत

इदारा

पैदा किया अल्लाह ने उम्मत में नबी की
सद शुक्र में शुमार है उम्मत में नबी की
पढ़ते दुरूद खूब हैं हम अपने नबी पर
और भेजते सलाम हैं हम अपने नबी पर
सुन्नी हैं अहले बैत से रखते हैं मुहब्बत
खुलफाए राशिदीन से रखते हैं अक़ीदत
हज़रत अलीये मुरतज़ा उम्मत के रहनुमा हैं
हज़रत हसन हुसैन भी हम सब के पेशवा हैं
बूबक्र, उमर उस्मां से नहीं उनको बैर था
वो जानते थे दौर में उनके तो ख़ैर था
बूबक्र, उमर, उस्मान को बरहक वो जानते थे
तरतीब से खलीफा भी उनको वो मानते थे
उन को इमाम मान कर पीछे पढ़ी नमाज़
महबूबे हक़ है जान कर पीछे पढ़ी नमाज़
महबूब उनको रखते थे महबूब उनके थे
उनको अमीर मानते मामूर उनके थे
बूबक्र, उमर, उस्मान व अली जन्नती हैं ये
हसनैन भी इब्नाने अली जन्नती हैं ये
राज़ी हुआ उनसे खुदा ये दिल से मानिये
अखबारे नबी में है लिखा, दिल से मानिये
कुर्आन भी शाहिद है आयात देखिये
उलमाए बाखबर से तस्दीक लीजिये
आओ पढ़ें हम अब दुरूद अपने नबी पर
भेजें सलाम आल और असहाबे नबी पर

❖❖❖

नजात (मोक्ष)

इदारा

पश्चात इस जीवन के
जीवन है दूसरा
सुख होगा उस जीवन में
या होगा दुख भरा
यह बात सबसे सच्चे ने
हमको बताई है
अल्लाह के नबी ने
हमको बताई है
सुख वाँ मिलेगा कैसे
यह भी बता दिया
कैसे बचेंगे दुख से वाँ
यह भी सिखा दिया
कह दो नहीं माबूद है
अल्लाह के सिवा
हो जाओगे सफल वहां
हज़रत ने ये कहा
मैं जो कहूँ वह मान लो
रब का यह हुक्म है
और पैरवी करो मेरी
रब का यह हुक्म है
बिन पैरवी मेरी वहां
होगी न अब नजात
यदि मोक्ष चाहते हो
मानो मेरी है बात
या रब मैं अन्तिम साँस तक
कहता रहूँ यही
सल्ले अलन् नबी
वसल्ले अलन् नबी

❖❖❖

क़िस्त 32

हम कैसे पढ़ायें?

शिक्षक बन्धुओं के लिये

–डॉ0 सलामतुल्लाह

–अनु0: मुहम्मद हसन अंसारी

पाठ संकेत की तैयारी

पहले पाठ संकेत तैयार करने का काम टीचर या ट्रेनिंग कालेज के विद्यार्थियों तक सीमित रहा है। और वह भी सही अर्थ में पढ़ाने की ग़र्ज़ से नही बल्कि सुपरवाइज़र या परीक्षक को दिखाने के लिये। लेकिन असल में स्थायी टीचर्स के लिये भी यह काम ज़रूरी है।

जिन टीचर्स ने कभी पाठ संकेत तैयार नहीं किये या सिर्फ ट्रेनिंग के ज़माने में किये थे, और जब उन्होंने स्थायी टीचर की हैसियत से काम करना शुरु किया तो पाठ संकेत तैयार करने के झमेले में नहीं पड़े कि इसमें प्रायः कठिनाई महसूस होती है। जब उनसे अपने दैनिक कार्यो की विधिवत यादें लिखने को कहा जाता है तो वह साल भर के काम की एक रूपरेखा तो तैयार कर लेते हैं किन्तु वह दैनिक कार्य के लिये पाठ संकेत तैयार करना अव्यवहारिक समझते हैं क्योंकि इस के लिये अधिक समय और सोच–विचार की ज़रूरत पड़ती है।

जो टीचर कुछ समय तक ट्रेनिंग हासिल किये बिना शिक्षण का कार्य करते रहते हैं जब ट्रेनिंग कालेज में दाख़िल होते हैं और "शिक्षण विधि" का साहित्य पढ़ते हैं, तो उन्हें बड़ी हैरत और परेशानी होती है, जब वह पढ़ाने के अभ्यास के लिये किसी स्कूल में जाते हैं तो उनकी समझ में नहीं आता कि सिद्धान्त और व्यवहार में किस प्रकार सन्तुलन क़ायम किया जाये। उनकी परेशानी बड़ी हद तक कम हो सकती है यदि वह किसी अनुभवी टीचर के काम को ध्यान से देखें कि वह सिद्धान्त को व्यवहार में किस प्रकार बरतता है। इस प्रकार की कठिनाइयाँ कुछ इसी पेशे के लिये सुनिश्चित नहीं हैं बल्कि दूसरे व्यवसायों में भी पेश आ जाती हैं। मिसाल के तौर पर नया डॉक्टर मरीज़ों का इलाज करते समय अक्सर उलझन में पड़ जाता है। इस का कारण यह है कि थ्यूरी की जानकारी तो बहुत रखता है लेकिन कढ़ा नहीं है। पढ़ा तो है। जब तक वह प्रयोग से यह न सीखेगा उस में आत्म विश्वास पैदा नहीं होगा और वह अपनी कमज़ोरियों को महसूस करने के कारण सफल डॉक्टर नहीं बन सकेगा। अतः टीचर को चाहिये कि वह उन सिद्धान्तों को समझ–बूझ कर काम में लाये जो उसने पाठ संकेत तैयार करने के सिलसिले में सीखे हैं।

प्रारम्भ में जब टीचर पाठ संकेत लिखने का अभ्यास करे तो बेहतर है कि वह उन सब चीज़ों को जो वह समझता है कि सबक़ के दौरान में पेश आयेगी विस्तार के साथ लिखे। कुछ चीज़ें वह बतायेगा, कुछ बच्चों से निकलवायेगा। यह तमाम चीज़ें संकेत में दर्ज होनी चाहियें। वास्तव में यह मेहनत का काम है और इसे सिर्फ ट्रेनिंग कालेज के छात्राध्यापक ही कर सकते हैं लेकिन किसी न किसी हद तक यह काम स्थायी अध्यापक को भी करना चाहिये। सिर्फ इसी प्रकार के अभ्यास ही के द्वारा टीचर अपने काम के सम्बन्ध में सही राय क़ायम कर सकता है। एक पाठ की समाप्ति पर वह दूसरे पाठ को क्रमबद्ध करता है और अपने संकेतों का मिलान उन दशाओं से करता है जो वास्तव

में क्लास में पेश आये, इसके बाद आशा है कि दूसरे पाठ के संकेत पहले से बेहतर होंगे।

जो टीचर पाठ संकेत तैयार करने के पक्षधर हैं वह उन्हें एक विशेष रूप में तैयार करना पसन्द करते हैं। हरबर्ट के सोपान इस कारण से बहुत लोकप्रिय हुए हैं। इनसे न केवल समय की बचत होती है अपितु टीचर को पूर्ण सन्तोष हो जाता है कि उसकी स्कीम दुरूस्त है, और उसका पाठ निश्चित सफल होगा। अतः आवश्यक है कि यहाँ उन ख़तरों से आगाह कर दिया जाये जो पाठ को एक विशेष विधि के अनुसार तैयार करने में निहित हैं। नवसिखिया के लिये पाठ तैयार करने में वह सोपान निश्चित ही सहायक होते हैं, क्योंकि प्रारम्भ में उसे एक अच्छे नमूने की नक़ल करनी चाहिये जैसा कि हर फ़न के मामले में आवश्यक है किन्तु उसे यह बात हमेशा ध्यान में रखनी चाहिये कि यह संकेत केवल उसी समय लाभदायक सिद्ध होंगे जब कि वह बच्चों के वास्तविक मानसिक स्तर के अनुकूल हों। टीचर को हमेशा कक्षा की ज़रूरतों की जाँच करनी चाहिये, यदि उनकी अनदेखी करके पाठ को इस बन्धी– टकी क्रमबद्धता पर भरोसा कर लिया गया तो इससे लाभ जगह हानि होने की आशंका है।

जब टीचर को पाठ संकेत लिखने की काफी महारत हो जाये और वह कक्षा–शिक्षण का पर्याप्त अनुभव प्राप्त करले तो वह विस्तृत संकेत के बजाय संक्षिप्त नोट लिख सकता है। नये डॉक्टर को शुरु में रोगी के सम्बन्ध में विस्तृत नोट लिखने की ज़रूरत पड़ती है लेकिन जब वह अनुभवी हो जाता है तो उसके लिये मात्र कुछ बिन्दु नोट कर लेना काफ़ी होता है। यही बात टीचर के लिए भी सही है। बेहतर है कि टीचर यह नोट्स एक डायरी में लिखे जिसके शुरू में पूरा पाठ्यक्रम अंकित हो ताकि हमेशा निगाह के सामने रहे कि कितना हिस्सा हो चुका है और कितना बाक़ी है। यदि विषय वस्तु से सम्बन्धित कोई नई बात मालूम हो तो उसे भी यथा स्थान दर्ज कर लेना चाहिये। यह सच है कि कभी–कभी टीचर की व्यस्तता के कारण पाठ संकेत तैयार करने का यथोचित समय नहीं मिलता, लेकिन उसे जो भी समय मिलता है उस में यह काम करने से वह अपने से अधिक अनुभवी टीचर्स से बेहतर काम कर सकता है। अगर समय की कमी हो तो कम से कम एक सप्ताह के काम की रूपरेखा बनाई जा सकती है। और प्रतिदिन पढ़ाने के बाद यह नोट करता जाये कि कहाँ तक इस रूप रेखा की पाबन्दी की जा सकती है।

और इससे हट कर काम करने की आवश्यकता क्यों पड़ी। इस प्रकार वर्ष के उपरान्त उसके पास कक्षा के कार्य का एक सही रिकार्ड हो जायेगा। जो आगे कक्षा के पाठ्यक्रम में उचित संशोधन करने के लिये बुनियाद का काम देगा।

फ़ायदा : इस तरह काम करने से टीचर को धीरे धीरे अपने काम में दिलचस्पी बढ़ती जायेगी और टीचिंग के प्रति उदासीनता कम होगी। और उसका इस काम में जी लगने लगेगा। और प्रत्येक नया पाठ्यक्रम, नया पाठ, नई कक्षा और नया बच्चा उसमें शैक्षिक सिद्धान्त तथा उद्देश्यों के शोध की ललक पैदा करेगा। और शिक्षण कार्य से उसे एक आन्तरिक सुख प्राप्त होगा जिसका कोई बदल नहीं।

जारी........

अनुरोध

लेखक जनों से अनुरोध है कि वह पन्ने के एक ओर लिखें, स्पष्ट तथा सरल लिखें।

धन्यवाद

सैलानी की डायरी

मुहम्मद हसन अंसारी

22 नवम्बर 2010 (सोमवार)

विधि का विधान : पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार आज लखनऊ जाना था, परन्तु सुबह सबेरे अचानक कार्यक्रम बदलना पड़ा। रात रायबरेली से मोहतरमः सिराजुन्निसा बेग, मेरे सीनियर और प्रिय दोस्त, भाई मन्सूर बेग की पत्नी के इन्तेक़ाल की अफ़सोसनाक ख़बर आ चुकी थी। "इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन" (हम सब अल्लाह के हैं, और उसी की तरफ़ पलट कर जाने वाले हैं) मिसेज बेग रायबरेली शहर की बेटी थीं, सन् 1972 में बेग साहब के निकाह में आई थीं। शिक्षा विभाग उत्तर प्रदेश में टीचर और बाद में प्रिंसिपल रहीं। रिटायरमेन्ट के बाद न्यूविज़न स्कूल रायबरेली की प्रिंसिपल रहीं, बेकार कभी न रहीं। काम में लगी रहतीं। साफ़ सुथरा ज़ौक़, सलीक़ः पसन्द, समय की पाबन्द, उम्दा टेस्ट, मेहमानों का बड़ा ख्याल रखने वाली, रख रखाव का ध्यान रखने वाली, अल्लाह से डरने वाली, आख़िरी वक्त से पहले एक बेटी और एक बेटे को हज बदल पर भेजा, उधर हज पूरा हुआ, इधर जान, जाने आफ़रीं के हवाले कर दी। हज का बडा शौक था, हज्जिन होकर गईं। 'खुदा बख्शे हज़ारों ख़ूबियाँ थी मरने वाले में'। अल्लाह मग़फ़िरत फ़रमाये। सुबह लखनऊ के बजाय रायबरेली के लिये निकला। रायबरेली पहुँचा। जनाज़ः तैयार। बाद नमाज़ ज़ुहर कहारों के अड्डे (अली मियाँ चौक) पर ख़ाँ साहब की लाल कोठी के सामने नमाज़ जनाज़ा हुई। और ढाई बजे के क़रीब बैरहना के क़ब्रिस्तान में सुपुर्द ख़ाक की गईं।

"मौत एक जिन्दगी का वक्फ़ः है,
यानी आगे चलेंगे दम ले कर।"

प्रिय अब्दुल हफ़ीज़ लखनऊ से तद्फ़ीन (अन्त्येष्टि) में आये थे उनके साथ शाम लखनऊ पहुँचे और देर तक साथ रहे।

23 नवम्बर 2010 (मँगलवार)

'बिन धरनी घर सून' : लखनऊ में आज कुछ अधिक व्यस्तता रही। कई जगह जाना था। कुछ सरकारी दफ्तरों में जाना हुआ। उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान हजरतगंज हो कर गये। हज़रतगंज में खुदाई चल रही है। सुन्दरीकरण के नाम पर कई बार कई अभियान गत पचीस वर्षों में चलाये गये हैं, किन्तु "मर्ज बढ़ता गया ज्यों ज्यों दवा की"। गन्दगी और अव्यवस्था पाँव पसारती ही चली जा रही है। स्थायी हल अवाम की सोच बदलने में निहित है, सो हम कर नही पा रहे हैं।

हिन्दी संस्थान साफ़–सुथरा दिखा, कर्मचारी, मुस्तैद मिले, सुव्यवस्था को पतझड़ सा लगता दिखाई पडा, शंभुनाथ जी के कार्यकाल की सुरूचिपूर्ण झलक अभी बाक़ी है। मुखिया की कुर्सी खाली है। 'बिन धरनी घर सून' की कहावत चरितार्थ होती दिखी।

सचिवालय की झलक देखी। सफाई और सुव्यवस्था पहले से अच्छी दिखी। फाइलों का अंबार बढ़ गया। सुकून नही, भाग दौड़ अधिक है। घरनी के घर वालों के बीच मौजूदगी मात्र से सब कुछ चुस्त दुरूस्त रहता है। अन्यथा की स्थिति में शिथिलता आ जाती है।

ईश्वर एक है। मालिक एक है। अकेला है। अधम और अगोचर है। उसे नींद नहीं आती। वह आदि है। सृष्टा है, ख़ालिक़ है, सर्वगुण सम्पन्न है, सर्वव्यापी है। वह सब कुछ सुनता है, सब कुछ देखता है, वह किसी का मुहताज नही, सब उसके मुहताज हैं। वह दयालु है, उदार है, जगदाता है। वह हमेशा रहा है और हमेशा रहेगा। फिर उसके रहते 'बिन धरनी घर सून' की कहावत चरितार्थ हो ही नहीं सकती। यह हमारी भूल है, ईमान व यक़ीन की कमज़ोरी है जिसे दूर किया जा सकता है। इसे पक्का करलें सब कुछ दुरुस्त हो जायेगा। यह अन्दर की बात है। हम उसे बाहर ढूँढते रहें तो कैसे मिलेगी, जो चीज़ जहाँ खोती है वहीं मिलती है।

रिवार्ड की आशा किये बिना अपना कार्य किये जाना ही कर्मयोग है। करके तो देखें, हमारे सारे टेन्शन और तनाव दूर हो जायेंगे। हम कामयाब होंगे। यही भारतीय संस्कृति और सभ्य मानव का वर्क कल्चर है।

शेष पृष्ठ 27 पर.........

समाज सुधार के चार ज़रूरी काम

1. शिक्षा का इस्लाम से गहरा सम्बन्ध है। पूरी दुनिया पर मुसलमान उस समय तक छाये रहे और अमन व शांति स्थापित रही जब तक उन्होंने शिक्षा की कमान अपने हाथ में रखी, आवश्यक है कि मुसलमान दोबारा इस ओर ध्यान दे और मोहल्ले–मोहल्ले गांव–गाव सर्वे करके उन बच्चों पर विशेष ध्यान दे जो शिक्षा नहीं प्राप्त कर पा रहे हैं। उनको शिक्षण संस्थाओं से जोड़ने के लिए हर सम्भव प्रयास करें।

2 इस्लाम का रिश्ता मुसलमानों से टूटता जा रहा है, खास तौर पर स्कूलों में जो शिक्षा दी जा रही है उससे मुसलमान धीरे–धीरे दीन से कटते जा रहे हैं। इसको रोकने के लिए आवश्यक है कि स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चों और बच्चियों के लिए मस्जिद–मस्जिद, मोहल्ला–मोहल्ला सुबह शाम की दीनी शिक्षा की व्यवस्था की जाए और उसके लिए मकतब स्थापित किये जाएं वर्ना ख़तरा है। आइन्दा आने वाली नस्ल इस्लाम से फिर जाएगी।

3. जिस चीज़ से इस समय मुसलमानों को बडा नुकसान पहुंच रहा है, वो आपस की लड़ाइयां, झगडे और मुकदमा बाजियां हैं, हर मुमकिन कोशिश करके सुलह सफाई कराई जाए और मुकदमे अदालतों में ले जाने के बजाए दारुलकजा में लाए जाएं और इस्लामी शरीअत के अनुसार जो फैसले हों उनको हर वर्ग दिल की खुशी के साथ स्वीकार करे वास्तव में ये फैसला हुज़ूर पाक सल्ल0 का फैसला है, इसमें दीन की भी सलामती है और दुनिया की भी।

4. इस्लामी समाज के लिए जो चीज़ नासूर बनती जा रही है वे समाज की ख़राबियां हैं, ब्याज, जुआ, लाटरी, सट्टा, शादी ब्याह में बेजा खर्च और फ़िज़ूल रस्में। मोहल्ले–मोहल्ले, गांव–गांव इन बुराइयों को मिटाने की कोशिश की जाए, और उनके लिए जो हो सके उपाय अपनाए जाएं।

तरीक़ा

समाज के सुधार के लिए उपरोक्त चार कामों की बड़ी आवश्यकता है इसलिए आवश्यक है कि मोहल्ले–मोहल्ले और गांव–गांव लोगों की जमाअत फ़िक्र के साथ खडी हो जाए, जिनमें बुजुर्ग लोग भी हों, जिनके मशवरों और सरपरस्ती से काम आगे बढ़ सके और चिन्ता करने वाले नौजवान भी हों जिनके काम करने की ताक़त और जज्बे से कौम को फ़ायदा पहुंचे।

मोहल्ले के जिम्मेदार लोग हफ्ते में एक दिन तय कर लें जिसमें मशवरा करें और पिछले कामों को जाएज़ा लें और आगे के कामों के लिए नया तरीक़ा तय करें।

ये चार काम अगर पूरी चिन्ता और लगन से कर लिये गये तो इन्शाअल्लाह जल्द ही इसके परिणाम सामने आयेंगे और मुस्लिम समाज एक मिसाली समाज बनेगा जो दूसरों के लिए भी नमूना होगा और इनकी हिदायत का ज़रिया भी। ❑❑

सलाम

मैं गवाही देता हूँ यह बरमला
है नही माबूद अल्लाह के सिवा
हैं मुहम्मद बन्दे उसके और रसूल
मैं सलाम उन पर जो भेजूँ हों कबूल
या नबी सल्ल0 तुम पर अस्सलाम
अस्सलामु, अस्सलामु, अस्सलाम

बाल साहित्य में नैतिक मूल्यों का महत्व

डॉ0 मर्ज़ियः आरिफ़

बच्चे क़ौम की अमानत होते हैं। किसी देश, समाज और ख़ानदान के भविष्य का अन्दाज़ा लगाना हो तो उसके बूढ़े व्यक्तियों का अपने बच्चों के साथ व्यवहार देखा जाता है, कि वह नई पीढ़ी की शिक्षा–दीक्षा और देख भाल पर कितना ध्यान दे रहे हैं। इस में उदासीनता क़ौम की अमानत के साथ खिलवाड़ करना है। बच्चों की शिक्षा–दीक्षा में सामाजिक और नैतिक मूल्यों की अनेदखी के घातक परिणाम होते हैं। इस अनदेखी के कारण बच्चों के अन्दर अच्छे संस्कार बनने से रह जाते हैं और बुराइयाँ घर कर लेती हैं।

'साहित्य समाज का दर्पण होता है'। साहित्य इन्सान के लिये सिर्फ दिल बहलाने का साधन नहीं, बल्कि उसे जीवन से जूझने और भविष्य की ओर आशा से देखने की ताक़त देता है। बाल–साहित्य ऐसा हो जो सकारात्मक सोच पैदा करे।

यह सही है कि समय के साथ मूल्य बदलते हैं किन्तु नैतिक मूल्यों की जड़ एक ही रहती है। सच्चाई, इन्साफ़, प्रेम, भाई चारा, दोस्ती, झूठ, अन्याय, नफरत, दुश्मनी के विपरीत हमेशा और हर सभ्य समाज में सराहे गये हैं।

बाल साहित्य मनोरँजन के लिये है यह सही है। परन्तु अप्रत्यक्ष रूप से उनमें नसीहत, भलाई और सीख की बातें लेखक के सामने हों। यह बहुत ज़रुरी है। हमारा प्रयास हो कि बाल–साहित्य में झूठ, चोरी, मारकाट, भेद–भाव, तँग नज़री, कामचोरी, गन्दगी, अव्यवस्था, नफ़रत, विनाशकारी प्रवृत्ति जगह नहीं पाये। और बाल साहित्य यथा कहानियाँ, कवितायें, संवाद, नाटक आदि ऐसे लिखे जायें जो बच्चों में मनोरँजन के साथ–साथ सद्‌गुणों का बीजारोपण करते चलें। यदि हम ऐसा कर सके तो क़ौम की इस अमानत को हम बेहतर और उज्जवल भविष्य के साथ आने वाले कल को दे पायेंगे। अन्यथा की स्थिति में हम अमानत में ख़ियानत के मुजरिम होंगे।

–प्रस्तुति : मुहम्मद हसन अंसारी

सैलानी की डायरी............

सीधे संवाद का शासन–प्रशासन में बड़ा महत्व है। यह कमन्यूकेशन गैप से बचाता है, समय और शक्ति की बचत होती है। ग़लतफ़हमी सर नहीं उठाने पाती। अकर्मण्यता पास नहीं फटकती। भ्रष्टाचार पनपने नहीं पाता।

24 नवम्बर 2010 (बुधवार)

आज लखनऊ में ठहरा हूँ। बेटे मुजीब और बहू को हज करके आज आना है। जद्दा से, सुबह चल कर जहाज़ को दोपहर से पहले 11 बजे लखनऊ पहुँचना था, पर पहुँचने के समय उड़ान शुरु हुई। जहाज़ पाँच घण्टे लेट है बल्कि इस से कुछ ज़्यादा ही। दस साल पहले जब हम दोनों हज करने गये थे तो वापसी में 65 घण्टे जद्दा हवाई अड्डे पर इन्तेज़ार करना पड़ा था, जिसका उल्लेख अपनी हज की डायरी में एक अजूबः के तौर पर किया था। दस साल में दुनिया ने बड़ी तरक़्क़ी की है। इक्कीसवीं सदी की पहली दहाई ठहरी न! उड़ानों के लेट होने में भी तरक़्क़ी हुई है। तब का 65 घण्टा अबका 5 घण्टा रह गया। तरक्की हुई है न! पर इस पर भी लोग शोर गुल करें और शिकायत करें तो कुछ अजीब सा लगता है। है न अजीब सा!

आख़िरी किस्त

ख़वातीने इस्लाम

(इस्लाम में महिलाओं का स्थान)

--अनु0: हबीबुल्लाह आज़मी

–मौ0 अब्दुर्रहमान नग्रामी नदवी

औरतों की बरकतें : शरीअते इस्लामिया में बहुत से आदेश ऐसे हैं जिसकी बुनियाद औरतों के अनुवादन और इच्छाओं पर रखी गई हैं और ऐसे बहुत से लाभ प्रद नियम व क़ानून हैं जिनकी नीव औरतों ने रखी है। हिन्दुस्तान में अन्य क़ौमों के लोगों से कितनी आवश्यकताएं पड़ती हैं। आपस में उपहार भेजे जाते हैं और एक की तरफ़ से दूसरे को तोहफे आते हैं। ग़ैर मुस्लिमों के उपहार स्वीकार करने की रस्म (रीति) एक औरत ने क़ायम की, फ़तीला बिन्ते अब्दुलअ़ज़ी पहले हज़रत अबूबक्र (रज़ि0) के निकाह में थीं। चूंकि वह इस्लाम नहीं लाई थीं, इस लिए सिद्दीक़ (रज़ि0) ने उन्हें तलाक़ दे दी थी। वह एक बार कुछ उपहार लाईं लेकिन ग़ैर मुस्लिम होने के कारण हज़रत अबूबक्र (रज़ि0) ने लेने से मना कर दिया। फ़तीला ने दुःखी होकर हज़रत आयशा (रज़ि0) के पास आदमी भेजा कि इसके लिए क्या उपाय हो। आप (रज़ि0) ने रसूलुल्लाह (सल्ल0) से पूछा, उसी समय आयत उतरी जिसमें ग़ैर मुस्लिमों से उपहार लेने का आदेश दिया गया है।

आज हम लोग सफ़र में तयम्मुम से कितना लाभ उठाते हैं लेकिन क्या कभी सोचा गया कि इस शानदार बरक़त (समपन्नता) का नज़ूल (अवतरण) किस कारण से हुआ ? गज्व–ए–बनी मुतलक़ के सफ़र में हज़रत आयशा (रज़ि0) का हार खो गया, लोग खोजने में लग गए। इस तलाश में काफ़ी समय लग गया। नमाज़ का समय निकट आ गया, पानी बिल्कुल न था। लोग बहुत परेशान हुए। बाज़ लोगों ने हज़रत अबू बक्र (रज़ि0) से आकर शिकायत की कि इस मुसीबत का कारण हज़रत आयशा (रज़ि0) हैं। इस अवसर पर आयते तयम्मुम नाज़िल हुई। असीद बिन हज़ीर (रज़ि0) ने कहा अनुवाद "ऐ अबू बक्र की औलाद यह तुम्हारी पहली बरकत नहीं है"। आयत के उतरने के बाद एक ऊँट उठाया गया तो हज़रत आयशा (रज़ि0) का हार मिल गया।

नबूवत काल में हुदैबिया की सुलह को कितना महत्व प्राप्त है। इस सुलह की पूर्ति एक औरत की राय से हुई। आ़म सहाबा सुलह की कुछ शर्तों से कुछ उदासीन थे। हुजूर (सल्ल0) ने इस स्थान (हुदैबिया) पर कुर्बानी करने का आदेश दिया लेकिन लोगों ने आदेश पालन में कुछ देर की। आप (सल्ल0) रंजीदः होकर ख़ेम–ए–मुबारक में तशरीफ़ ले आए, हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि0) ने निवेदन किया कि आप पहले खुद कुर्बानी फरमाइये तो अनायास और लोग भी आदेश का पालन करेंगे। आप (सल्ल0) ने ऐसा ही किया। ख़ेमें से बाहर तशरीफ़ लाए। जानवरों को मंगा कर ज़िबह किया। फिर तमाम सहाबा (रज़ि0) ने कुर्बानियां कीं।

वह लोग जो औरतों को राजनीति और देश के प्रशासन में दख़ल देने की इजाज़त नहीं देते, ग़ौर करें कि हुजूर (सल्ल0) ने किस प्रकार एक औरत की सलाह पर अ़मल किया। इस परामर्श में इतनी बड़ी समस्या को अच्छी तरह अंजाम तक पहुँचा दिया। जब मर्द और औरत दोनों वारिस हों तो फ़र्ज़ है कि मर्दों को औरतों का दूना हिस्सा देना चाहिये और इस नियम की बुनियाद भी एक औरत की दर्ख़्वास्त पर कायम की गई।

औस बिन सादिक़ का देहांत हुआ। मौत के बाद उनके चचा के बेटों ने तमाम सम्पत्ति पर क़ब्ज़ा कर लिया। दो बेटियां थीं लेकिन उन्हें भी मरने वाले की सम्पत्ति से वंचित रखा। बेवा ज़िन्दा थीं जिनका नाम उम्मे कहः था, उन्होंने रसूल (सल्ल0) के दरबार में आकर

शिकायत की। उस समय यह फ़रमान नाजिल हुआ कि अनुवाद "मर्दों को औरतों का दुगना हिस्सा मिलना चाहिये"।

उम्मे ज़मारः एक लौंडी (सेविका) थीं। हुजूर (सल्ल0) का उन पर गुज़र हुआ तो वह फूट–फूट कर रो रही थीं, आप (सल्ल0) ने पूछा कि क्यों रोती हो ? उन्होंने कहा कि मेरे मालिक ने बेचते समय मेरे बेटे को मुझ से अलग कर दिया अर्थात मुझे दूसरे के हाथ बेचा और लड़का किसी दूसरी जगह गया। आप (सल्ल0) ने उसी समय यह आदेश दिया कि माँ और बेटे के बीच तफ़रीक़ (वियोग) न करना चाहिए।

बहुधा ऐसा हुआ कि औरतों की कोशिश से क़बीले के क़बीले मुसलमान हो गये हैं। चुनांनचि क़बीला तै तमाम का तमाम एक औरत की कोशिश से इस्लाम लाया। सफिया बिन्ते हातिम कैद होकर रसूल (सल्ल0) के दरबार में आई और हुजूर (सल्ल0) से निवेदन किया कि मेरा बाप कैदियों को फ़िदया देकर छोड़ता था, अब मुझे शर्म आती है कि मैं अपने आपको रूपया देकर रिहाई दिलाऊँ, हुजूर (सल्ल0) की कृपा मेरा शफ़ीअ (अनुशंसक) है। आप (सल्ल0) ने उन्हें रिहा फ़रमा दिया और हातिम के लिए दुआ की। सफिया (रजि0) अपने क़बीले में वापस आईं तो उन्होंने निहायत ऊँची आवाज़ से कहा कि यह किस कदर दुःख की बात है कि तुम ऐसे व्यक्ति से मुँह फेरते हो जो दया व स्नेह का पुतला है और मेहरबानी का देवता है। क़बीले ने उन की इस बात को स्वीकार किया और खुदा के पवित्र रसूल (सल्ल0) पर ईमान लाए

इसी प्रकार एक और घटना का वर्णन बुखारी की पुस्तक अलतैमिम में है। इमरान इब्ने हस्सुयीन (रज़ि0) फ़रमाते हैं कि एक बार हम सफ़र से वापस आ रहे थे। रास्ते में पानी की सख़्त ज़रूरत थी। पास पड़ोस में कहीं पानी का नामोनिशान न था। एक रोज़ आदेशानुसार हम लोग पानी की खोज में निकले, रास्ते में एक औरत मिली जो पानी की एक मशक भरे ले जा रह थी। पूछने पर मालूम हुआ कि यहाँ से पूरे एक दिन की राह पर पानी मिलता है। उस औरत को हम लोग दरबार में लाए। आप (सल्ल0) उस पानी के लिए बरकत की दुआ फ़रमाई। सबने जी भर कर पानी पिया और फिर कुछ अनाज आदि देकर उसे वापस कर दिया।

यह औरत जिस क़बीले की थी वह अब तक इस्लाम न लाया था लेकिन क़बीले में जाकर कहा करती थी कि नबूवत का दावा करने वाला या तो जादूगर है या वास्तव में ख़ुदा का पैगम्बर है। मुसलमानों का यह नियम हो गया कि उन्होंने पास के सभी क़बीलों से जंग की लेकिन इस क़बीले से कभी कुछ नहीं बोले। वह औरत सभी बातों पर गौर करती थी। अन्त में एक दिन उसने इस्लाम की दावत को स्वीकार करने की इच्छा प्रकट की और क़बीले वालों को संबोधित करके कहा कि तुम नहीं देखते कि यह दयालु कौम हमारे साथ कैसा व्यवहार करती है, क्या तुम नहीं पसन्द करते कि इस पवित्र दल में दाखिल हो जाओ? क़बीले ने इस दावत को स्वीकर किया और पूरे का पूरा क़बीला इस्लाम लाया।

इसके अतिरिक्त व्यक्तिगत दावतें और उनके नतीजे की बहुत सी मिसालें मिलती हैं। मिसाल के लिए दो एक का वर्णन किया जाता है। सआदिया क़ुरैश की एक उच्च कोटि की वक्ता (मोकर्रिर) थीं। हज़रत उस्मान (रज़ि0) उनके भांजे थे। जब सरवरे काइनात सल्ल0 ने मक्का मुअज़्ज़मा में इस्लाम की दावत और प्रचार का काम शुरु किया तो हज़रत उस्मान (रज़ि0) उनसे सलाह लेने के लिए गये और उन्हीं के परामर्श का नतीजा था कि उस्मान (रज़ि0) बिन अफ़्फ़ान मुसलमान हुए।

इक्रिमा बिन अबूजेहल जिन्होंने हजरत उमर फ़ारूक़ के शासन काल में रूमियों और ईरानियों के मुकाबले में बड़ी जवांमर्दी दिखाई, उन की बीवी उनसे पहले मुसलमान हो चुकी

थी। इकिरमा (रजि0) ने रहमतुलिलआलमीन (मुहम्मद सल्ल0) से अपने पति के लिए पनाह मांगी। फिर चमन गई और इकिरमा से मिलकर कहा "तुम एक ऐसे शख्स के दामन से भागते हो जो सुधार और सभ्यता का एक अचूक नुस्खा (प्रति) अर्थात कुर्आन अपने साथ लाया है फिर उनको रसूलुल्लाह (सल्ल0) की सेवा में ला कर पेश किया।

हजरत अनस (रजि0) के बाप मालिक का जब देहांत हो गया तो उनकी माँ उम्मे सुलैम ने दोबारा निकाह करना चाहा। अबूतलहा (रजि0) ने निकाह का प्रस्ताव पेश किया लेकिन उन्होंने इस कारण इन्कार कर दिया कि वह मुश्रिक थे। उत्तर में कहा कि तुम ऐसी मूर्तियों को पूजते हो जिन के बस में लाभ व हानि का कोई हिस्सा नहीं और मैं ऐसी हस्ती की उपासना करती हूँ जिसकी शक्ति तमाम शक्तियों से श्रेष्ट है। मेरा तुम्हारा क्या मुकाबला। यह उत्तर जोरदार शब्दों में दिया गया कि अबूतलहा अति प्रभावित हुए और मुसलमान हो गये।

औरतों की प्राथमिकता :

इस विषय के अंतर्गत हम उन चीजों का वर्णन करना चाहते हैं जिन में महिलाओं को वरीयता तथा प्राथमिकता प्राप्त है। इन प्राथमिकताओं में से कुछ ऐसी हैं कि यदि उनके कर्मों की सूची में इसके सिवा कुछ न होता तो इस्लाम की श्रेष्टता के इतिहास में औरतों की ख्याति के लिए काफी था।

1. पैगम्बरे खुदा (सल्ल0) के इस्लाम की दावत पर सबसे पहले एक औरत ईमान लाई क्यों कि यह सर्वमान्य है कि हजरत खदीजतुलकुबरा (रजि0) सबसे पहले इस्लाम लाईं।

2. मुसलमानों में सबसे पहले शहादत का दर्जा एक औरत ने प्राप्त किया। उनका नाम सुमय्य: (रजि0) था। वह मशहूर सहाबी अम्मार बिन यासिर (रजि0) की माँ थीं। अबूजेहल ने उन्हें शहीद किया था।

3. कुफ्फारे कुरैश ने जब हुजूर (सल्ल0) के कत्ल का इरादा किया है तो सबसे पहले एक औरत ने सूचना की।

4. मुसलमानों में सबसे पहले ताबूत का चलन एक औरत अस्माअ बिन्ते अमीस ने चलाया। मुहाजिरीने हब्शा में से थीं और वहा ईसाइयों में यह तरीका राइज था। उन्होंने इसे इस्लाम में दाखिल किया। इससे यह भी संकेत मिलता है कि अगर किसी दूसरी कौम में कोई अच्छा अमल राइज हो तो अपने यहां उसे राइज करना जाइज है।

5. हिजरत के बाद सबसे पहले आप (सल्ल0) की मेहमानदारी उम्मे सईद नामी एक औरत ने की।

6. समुद्री जिहाद का शौक सबसे पहले एक औरत ने जाहिर किया। हुजूर (सल्ल0) उम्मे हराम (रजि0) के घर में आराम फरमा रहे थे। ख्वाब (सपने) से जागे तो मुस्करा रहे थे। उम्मे हराम (रजि0) ने कारण पूछा तो फरमाया कि मैंने अपनी उम्मत के कुछ आदमियों को समुद्र में जिहाद करते हुए देखा है। उन्होंने निवेदन किया कि दुआ फरमाइये कि मैं उन्हीं में से हूँ। आप (सल्ल0) ने फरमाया तुम उनमें से हो। चुनांचि हजरत उस्मान (रजि0) के शासन काल में जो फौज आक्रमण के लिए रवाना हुई उसमें यह भी थीं और घोड़े से गिर कर शहीद हुईं।

7. इस्लाम में सबसे पहले अस्पताल नबूवत काल में रफीदा असलमीय: नामी एक औरत की देखरेख मे स्थापित हुआ जो खास मस्जिद में था।

8. मुअज्जात (चमत्कार) को सबसे पहले एक औरत हजरत खदीजा (रजि0) ने प्रमाणित किया।

9. सोने का अमली अपमान (तौहीन) की शुरुआत एक औरत ने की। कामिल इब्ने असीर में है कि हजरत अली (रजि0) सबसे पहले मदीना में एक बेवा औरत के यहां उतरे। उन्होंने देखा रोजाना एक व्यक्ति आता है और कुछ दे जाता है। एक रोज पूछा तो उसने कहा सुहैल बिन हनीफ अपनी कौम के बुत (मूर्ति) तोड़ कर मुझे दे जाते हैं और मैं उनको ईंधन बनाती हूँ।

❖❖❖

मुस्लिम समाज

– हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी

हमारे समाज के सुधार योग्य पहलू: समाज सुरचना व सुव्यवस्था के बाद ही अच्छे नतीजे देता है। इस के सुनिश्चित कार्य शैली की पाबन्दी से ही संस्कृति, सभ्यता और अनेक सामाजिक मूल्य प्रस्फुटित होते हैं। नमूदार होते हैं। और एक समाज दूसरे समाज के मुक़ाबले में अपनी विशेषतायें उजागर करता है।

किसी समाज की जीवन शैली बनाने में समकालीन शासन तथा सामूहिक काम कने वाले संगठनों और समाज सुधारकों का बड़ा रोल होता है। यह काम हुकूमतों का होता है कि समाज के बड़े ढाँचे को सभ्य और सुरूचिपूर्ण रखने के लिये वह अपने संसाधनों और रूचि को सक्रिय करें। इसमें शिक्षा–व्यवस्था और प्रबन्धकीय जतनों से काम लेना पड़ता है। परन्तु दुख की बात है कि पूरब की हुकूमतें इस सिलसिले में बहुत कोताही बरतती हैं। इस का मूल कारण यह है कि हमारे पूरब में हुकूमतों को अपनी सत्ता को बचाने में जो ध्यान देना पड़ता है उसमें उनके प्रयासों का बड़ा हिस्सा लग जाता है। और राष्ट्र की नैतिक खूबी, सभ्यता और समाज को संवारने का काम कम हो पता है।

विकसित पश्चिमी देशों में सामाजिक सुव्यवस्था पर पर्याप्त ध्यान दिया जाता है। लेकिन पूरब और पश्चिम के दर्शनशास्त्र अलग–अलग हैं। इसलिये पश्चिमी देशों में अपनाई गई तदबीरें पूरब के देशों की सोच से पूरी मेल नहीं खातीं। पश्चिमी देशों में अधिक ध्यान सुव्यवस्था, शिक्षा व उद्योग और वाह्य सफाई तक सीमित है। भौतिक लाभ–हानि पर उसकी सोच केन्द्रित रहती है। इसके विपरीत पूरब के नेशन्स में धार्मिक तथा मानवीय मूल्यों का लेहाज किया जाता है। किन्तु वर्तमान युग में हमारे पूरब के समाज मे ख़राबी बढ रही है और हालत बिगडती जा रही है।

सामूहिक जीवन की संरचना वह क्रिया है जिसके द्वारा कोई मानव समाज जॅगल के समाज से बरतर और बेहतर बनता है। और इस सिलसिले में असावधानी करने से जॅगल के समाज के निकटतम हो जाता है। अतः ज्ञानी व संवेदनशील व्यक्तियों को अपने समाज की बेहतरी के लिये इस्लामी शिक्षा के प्रमाणिक भण्डार में सामाजिक जीवन के अनेक पहलुओं पर पर्याप्त सामाग्री मिलती है। हुज़ूर सल्ल० ने शिक्षा–दीक्षा का कोई पहलू नहीं छोड़ा है। सब के लिए स्पष्ट निर्देश दिये हैं। और इस तरह इन्सानों की समाजी जिन्दगी को सुथरा और शाइस्ता बनाने की कोशिश की है। आप की यह कोशिश केवल चिन्तन व निर्देशों के दायरे तक सीमित नहीं रही बल्कि मानव के जिस समाज से आपको सीधे वास्तः पड़ा आपने उसकी व्यवहारिक दीक्षा दी। और यह दीक्षा बे मिसाल साबित हुई। पूरे मानव इतिहास में उस समाज से अच्छा समाज आज तक काइम न हो सका। और आगे भी इसकी आशा नहीं। यह वह समाज है कि कम से कम मुस्लिम समाज पर इस की नकल करने की कोशिश, रहती दुनिया तक फ़र्ज है। बल्कि यह समाज तमाम इन्सानी समाज के लिये भी बेहतरीन नमूना और मानक है। ग़ैर मुस्लिम समाज भी अगर इसे व्यवहार में लाने का प्रयास करे तो इसके लाभदायक परिणामों का वह भी अनुभव कर सकते हैं।

हुज़ूर सल्ल० ने सामाजिक सम्बन्धों और मामलों के तमाम (समस्त) व्यवहारिक पहलुओं की प्रशंसा व सुधार पर बल दिया है। और आप के कथन से यह ज़ाहिर होता है कि इगर इनमें कमज़ोरी है तो इबादत में ज़्यादती भी काम नहीं आ सकती है।

किन्तु दुख की बात है कि हमारे समाज सुधारकों का ध्यान इन बातों पर उतना नहीं है जितना होना चाहिए। फलतः सामाजिक जीवन में कुछ ऐसी ख़राबियाँ पैदा हो गयी हैं जिन से इस्लामी समाज का पूरा चेहरा गन्दा हो जाता है। और इसके साथ साथ ऐसी समस्यायें भी खड़ी हो जाती हैं कि समाज अनेक प्रकार की खींच तान, परेशानियों और अफरातफरियों का शिकार हो रहा है। इनमें सबसे ज़्यादा विचारणीय आपस की फूट, फिरकः बन्दी, स्वार्थपर्थता, मनमानी और बेग़ैरती की बातें हैं जिनसे मिल्लत दाग़दार हो रही है। इन बातों का असर आपस के सम्बन्धों और समस्याओं पर पड़ता है और इनसे छोटी–बड़ी बहुत सी ख़राबियाँ पैदा होती हैं।

मुस्लिम समाज हम सब के संगठन का नाम है। कोई ऐब अगर हमको अपने किसी भाई में नज़र आता है तो हमको यह समझना चाहिये कि वह हम में भी हो सकता है, शायद शक्ल बदली हुई हो। दूसरे के अन्दर ऐब देखकर ऐब को महसूस कर लेना और उसे दूर करने का प्रयास करना बड़ी समझ की बात है।

मुस्लिम समाज के हालात का जायज़ा लिया जाये तो इसकी ख़राबियों के कारणों मे इस दायरे की बहुत सी बुराइयाँ नज़र आयेंगी। हालाँकि मुस्लिम समाज को हुज़ूर सल्ल० से जो शिक्षायें मिली हैं उनमें इस की ओर बहुत ध्यान दिलाया गया है। आपने फ़रमाया 'एक मुसलमान दूसरे मुसलमान को सिर्फ़ अपना भाई ही न समझे बल्कि उसके लिए वही पसन्द करे जो ख़ुद पसन्द करता है। एक मुसलमान दूसरे मुसलमान से ऐसा तअल्लुक पैदा करे जैसा कि एक ईंट दूसरी ईंटों के बीच होती है और एक ईंट दूसरी ईंट को थामती और मज़बूत करती है'।

इन बातों को सामने रखकर हम अपने समाज पर जब निगाह डालते हैं तो बड़ी निराशा होती है। हम उसका मामला इस्लामी शिक्षा के बिल्कुल विपरीत पाते हैं। हम देखते हैं कि एक मुसलमान दूसरे मुसलमान को व्यवहार में अपने भाई का मुक़ाम बिल्कुल नहीं देता, और अगर बाज़ असरात की वजह से किसी हद तक भाई का मुक़ाम देता है तो उसके हितों को वह दर्जा नहीं देता जो अपने हितों को देता है। बल्कि मुस्लिम समाज में यह बात साफ तौर से देखी जा सकती है कि एक मुसलमान दूसरे मुसलमान से सिर्फ अपने व्यक्तिगत फ़ायदे के दायरे ही में तअल्लुक रखता है। अगर उसके अपने फ़ायदे का मामला न हो तो फिर उसको उससे कोई दिलचस्पी नहीं रहती। माल के ख़रीदने–बेचने में, आचरण में, दोस्ती, दुश्मनी करने में, सम्बन्ध जोड़ने और तोड़ने में इस्लाम के मुक़र्रर किये हुए अख़्लाक़ बिल्कुल नज़र नहीं आते। रहा यह कि एक मुसलमान दूसरे मुसलमान को अपना भाई समझे और उसके लिये वही चाहे जो अपने लिये चाहता है तो इस की तो कल्पना भी कठिन हो गयी है। इसका असल कारण स्वार्थ का वह चलन है जो ग़ैर मुस्लिमों से मुसलमानों में ट्राँस्फर हो गया है बल्कि ग़ैर मुस्लिम से ट्राँस्फर होने की क्या ज़रूरत सवयं आदमी का नफ्स ही यह काम कर लेता है।

मुसलमानों के अन्दर इस ख़ुदग़र्ज़ी के फैलने के बाद, इसका प्रभाव मुस्लिम समाज पर खुल कर पड़ने लगा है। और यह असर राजनीतिक और आर्थिक क्षेत्र में ज़्यादा है। राजनीतिक जीवन में मुसलमानों की बदहाली में इस

ख़ुदग़र्ज़ी का दख़ल ज़्यादा है। प्रत्येक व्यक्ति लीडर तो बनना पसन्द करता है लेकिन मातहत बनने के लिये तैयार नहीं। और ज़ाहिर है कि किसी समुदाय में सिर्फ एक ही लीडर हो सकता है, और जब कई लोग लीडर बनाना चाहेंगे ता गिरोहबन्दी होगी, और दुश्मन की बन आयेगी। और कोई भी ख़तरा झेल नहीं पायेगा। और यही इस समय मुसलमानों की जमाअतों, अँजुमनों, इदारों यहाँ तक कि मस्जिदों की हँगामी कमेटियों की कहानी है कि इमाम अपना फ़रीज़ः और ज़िम्मेदारी समझने के बजाय (सदस्यों) के हुक्म व इन्तेज़ाम को अपना हक़ ज़्यादा समझने लगे हैं। और फिर इस रस्साकशी में अँजुमन या इदारा बर्बाद हो जाता है या टुकड़ों में बँट जाता है।

यह बात कि एक मुसलमान दूसरे मुसलमान को अपना भाई समझे और उसके हितों को वही महत्व दे जो अपने हितों को देता है एक सपना बन चुकी है। हालाँकि एक मुसलमान का दूसरे मुसलमान को अपना भाई समझना वह ताक़त है जिस पर मिल्लत को संगठित करने का कार्य निर्भर है और उसके इतिहास में बेशुमार कामयाबियाँ इसी से मिली हैं। और आज भी मिलती हैं। यह वह ताक़त है जिस पर दूसरे समुदाय रश्क करते हैं।

इस भाईचारे में गोरे–काले का, आक़ा व ग़ुलाम का, अमीर–ग़रीब का, हाकिम व महकूम का और ताक़तवर व कमज़ोर का फ़र्क़ ख़त्म हो जाता है। इसी की मिसाल बिलाल हब्शी रज़ि0, सुहैल रूमी रज़ि0 सलमान फ़ारसी रज़ि0 और अबूबक्र क़र्शी रज़ि0 के भाईचारे और दोस्ती में मिलती है कि सब हुज़ूर सल्ल0 के नेतृत्व में न सिर्फ इकट्ठा हो गये बल्कि दोस्त, साथी और हमप्याला व हमनिवाला बन गये। ग़ुलाम व आक़ा का फ़र्क़ उठा तो दुनिया ने यह नमूना भी देखा कि महान शासक उमर फ़ारूक़ रज़ि0 बैतुलमुक़द्दस में सत्ता सँभालने के लिये दाख़िल होते हैं, ख़ुद पैदल हैं और उन का ग़ुलाम सवारी पर, क्योंकि सवारी एक थी और बारी–बारी उस पर बैठते थे और शहर में दाख़िल होते हुए ग़ुलाम की बारी थी।

वतनियत का फ़र्क़ इस तरह मिटाया कि ईरान में जन्मे सलमान फ़ारसी रज़ि0 इस्लाम के परिसर में दाख़िल होते हैं और मुहम्मद बिन अब्दुल्ला क़रशी फ़रमाते हैं कि "सलमान हम में मिस्ल घर वाले के हैं।" और आप सल्ल0 हज्जतुलविदा के मौक़े पर एलान फ़रमाते हैं कि "अरब को अजम (ग़ैर अरब) पर और अजम को अरब पर, गोरे को काले पर और काले को गोरे पर कोई बरतरी हासिल नहीं, अलावा इसके कि उसमें नेकी व एहतियात हो। सब आदम के बेटे हैं, और आदम मिट्टी से बने हैं"। हुज़ूर सल्ल0 का लोगों के साथ मुआमला इसी के अनुसार रहा। आपने अपने आज़ाद कर्दः ग़ुलाम हज़रत ज़ैद बिन हारिसः रज़ि0 और उनके बेटे ओसामा बिन ज़ैद रज़ि0 से अपने भतीजों और नवासों की तरह स्नेह का मामला किया।

यह वह भाईचारा था जिसने दुनिया में एक इन्क़लाब बरपा कर दिया। पूरब से पश्चिम तक इसके आसार व नतीजे सामने आने लगे। और एक ही बिरादरी में हिन्दी, तुर्की, रूमी व ईरानी, अरब व बरबर, मिस्री व हब्शी इकट्ठा हो गये। लेकिन आज हम फिर टुकड़ों में बँट गये हैं और हमको अपने रंग व नस्ल पर गर्व होने लगा है। आपस में दूरियां बढ़ी हैं। आज हम एक दूसरे के मामले में नफ़्स परस्ती और ख़ुदग़र्ज़ी का शिकार हो चुके हैं। अपने हित को न केवल सर्वोपरि मानते हैं बल्कि अपने फ़ायदे के सामने दूसरे के हर तरह के नुक़सान को क़ुबूल कर लेते हैं।

इस समय आवश्यकता इस बात की है कि हम व्यक्तिगत लाभ की चिन्ता सामूहिक लाभ की बलि देकर न करें। इसके लिये बेहतरीन उसूल वही है जो हमारे नबी सल्ल० ने बताया "अपने भाई के लिये वही चाहे जो अपने लिये चाहते है।" एक मुसलमान जब दूसरे मुसलमान को अपना भाई समझेगा तो उसके हितों को नुकसान पहुँचाना गवारा नहीं करेगा, और न किसी और को उसका दिल दुखाने देगा। न खुद उसके दिल को दुखायेगा, उसकी बेइज़्ज़ती और बदनामी को स्वीकार न करेगा, बल्कि उसकी तरक़्क़ी से खुश होगा और उसके फ़ायदे को एक हद तक अपना फ़ायदा समझेगा और अगर कोई कड़वाहट पैदा हो जायेगी तो उसको नजर अन्दाज़ कर देगा। उसके हितों को नुक़सान पहुँचाना तो दूर की बात है। और अगर कोई अदावत कारणवश पैदा हो जाती है तो जल्द से जल्द उसे दूर करने की कोशिश करेगा। उसके कारोबार को गिरने से बचायेगा। उसके सौदे पर हस्तक्षेप कर के अपना सौदा न शुरु कर देगा। उस की खुशी और गम को अपनी खुशी व गम समझेगा।

❖❖❖

आइये हम सब मिलकर........ स्पष्ट है कि हमको अपनी सोच बदलनी पड़ेगी। ऋषि मुनि, सन्त–सूफ़ी क्या करते थे ? पहले सोच बदलते थे फिर लोग उनके हो जाते थे। हमारे हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया (रह०) का एक किस्सा है कि "एक बार वह बैठे हुए थे जाहिर है कि बुजुर्गों के पास लोग उपहार आदि लेकर आते रहते है तो एक सज्जन कैंची लेकर आए, उनके यहाँ की कैंची बहुत मशहूर थी और कहा कि हज़रत कुबूल कीजिए। इस पर हज़रत ने कहा कि भाई ठीक है, लेकिन काश की तुम सूई लाते क्योंकि काटने वाले तो बहुत हैं सीने वाले बहुत कम। ऐसे ही एक बुजुर्ग के बारे में आता है कि वह एक नाव पर सवार थे। उस पर कुछ लड़के भी थे जो उन्हें परेशान करने लगे। उन बुजुर्ग को लगा कि शायद ये हमें पहचानते नहीं, इसलिए हमारा मज़ाक उड़ा रहे हैं। इतने में अल्लाह का एक फरिश्ता आया और कहा कि आप कहें तो उन्हें नदी में डाल दिया जाए और उन्हें अभी सबक सिखाया जाए। इस पर उन बुजुर्ग ने कहा, ऐ मेरे रब! जब आप उनको उठाकर नदी में फेंक सकते हैं तो उनका हृदय परिवर्तन भी कर सकते हैं। असल बात तो यही है और यही सन्देश मानवता का है कि सोच बदली जाए।

इन्सानियत जब हमारे अन्दर पैदा होगी तो हर चीज़ ठीक और हर समस्या का निदान हो जाएगा और यही बुनियादी तौर पर हमने तय नहीं किया और उसके लिए आगे नहीं बढ़े। एक दूसरे को समझा–बूझा नहीं तो भाई दूर रह कर जाहिर है कि आदमी डरता ही रहता है। यही कानपुर जो है दंगा–फसाद के मामले में मशहूर रहा है। तो जो दूर रहता है जब वह हादसे की खबर सुनता है तो बड़ा भयभीत होता है और सोचता है कि क्या होगा ? लेकिन जब घर फोन करता है तो पता चलता है कि अरे भाई! एक मुहल्ले में दो–चार आदमी लड़ पड़े थे और कुछ नहीं। और इसे मैं क्या कहूँ। हमारे ये मीडिया वाले राई को पर्वत बना देते हैं। इतनी सी खबर, मोटी से हेडिंग लगा दी। सब घबरा गए कि क्या हुआ ? ऐसे मामले हों तो उस को दबा कर लिखना चाहिये। इससे लोगों की सोच ख़राब नहीं होती और जल्दी से समस्या का निदान हो जाता है। जब ये उछाल देते है किसी मसले को तो बात बिगड़ जाती है।

जारी..........

नव वर्ष की आप बीती

सम्पादक

लीजिये देखते ही देखते सच्चा राही के नौ वर्ष पूरे हो गये। अल्लाह से दुआ है कि इन वर्षों में हमने जो लिखा है, उससे लोगों को लाभ पहुँचता रहे और वह अच्छी बातें लोगों को याद रहें तथा इसी काल में सच्चा राही में हमसे जो गल्तियाँ हुई हों, जो गलत बातें, हानिकारक बातें हमारे कलम से निकल गई हों अल्लाह अपने करम से अपनी कृपा से उन को क्षमा कर दे, हमारे पाठक भी हम को क्षमा कर दें, अल्लाह ऐसी भूल–चूक की बातों और शब्दों को हमारे पाठकों से भुला दे, उनके मस्तिष्क से निकाल दे और हमें भविष्य में अच्छा तथा लाभ दायक लिखने की तौफ़ीक़ दे।

यह नया वर्ष आपके सम्पादक की परीक्षाओं का वर्ष रहा, मुझ सम्पादक की जन्म तिथि 11.08.1933 ई0 है मैं अब अठत्तरवें वर्ष में प्रवेश कर चुका हूँ, इस वर्ष पहले मेरी बाईं आँख का कंटरेक्ट (मोतियाबिन्द) का ऑप्रेशन हुआ, ऑप्रेशन सफल रहा परन्तु जल्द ही आखों के परदे का रोग लग गया। बहुत दौड़ धूप हुई। हज़ारों खर्च हुआ परन्तु कोई लाभ न हुआ। डॉक्टरों ने बताया कि यह रोग बुढ़ापे में होता है और इस का कोई इलाज नहीं। सब्र किया। अल्लाह का शुक्र अदा करता कि एक आँख तो सुरक्षित है उसी से काम होता रहा कि उसमें भी मोतिया बिन्द का रोग ज्ञात हुआ। इस बार बड़े मंहगे तथा प्रसिद्ध नेत्र चिकित्सक से ऑप्रेशन करवाया, आप्रेशन सफल रहा। एक सप्ताह तक बराबर लिखने पढ़ने का काम चलता रहा कि अचानक इस दाहनी आंख की रौशनी भी कम हो गई। डॉक्टरों ने बताया कि इसमें भी परदों वाला चिकित्सा रहित रोग लग चुका है। दुख हुआ, दौड़ धूप की, कुछ डॉक्टरों ने परामर्श दिया कि एक इन्जेक्शन इस का इलाज है। पर वह बड़ा ही रिस्की है। अमरीका में निषेध है लेकिन बहुत से देशों में प्रचलित है। अपने रिस्क पर लगवाया जा सकता है। इससे जहां लाभ की आशा है वहीं बड़ी हानि का भय भी है, यहां तक कि इन्जक्शन लगाते समय कोई दुखद घटना भी घट सकती है। इनजेक्शन लगाने से पहले यह सब बातें एक छपे फार्म पर रोगी के समक्ष लाकर उसके हस्ताक्षर लिये जाते हैं कि मैं अपनी जिम्मेदारी पर यह इन्जेक्शन लगवा रहा हूँ।

फिर इस इन्जेक्शन का मूल्य किसी डॉक्टर के यहां हज़ार, किसी के यहां दस हज़ार है, और यदि पहले इन्जेक्शन से कोई हानि न हो, ना ही लाभ हो तो दूसरा तीसरा इन्जेक्शन भी लगवाना चाहिये। मैंने साहस करके और पैसे जुटा के दो इन्जेक्शन लगवाए। अल्लाह की मरजी कि कोई लाभ न हुआ, कोई हानि भी न हुई। अब दशा यह है कि पढ़ने में बड़ी कठिनाई है। हांग कांग से एक स्पेशल ऐनक आई है, साथ में एक 20 पावर का मैगनी फाइंग ग्लास भी है, तेज़ रौशनी में बहुत करीब करके पढ़ता हूँ। मैंने दिसम्बर के कवर पर लिखा "नया साल हिज्री मुबारक हो" कम्पोजिटर ने साल छोड़ दिया मैं देख न सका। अलबत्ता लिख लेता हूँ। सच्चा राही के करेक्शन के लिये एक ग्रेजुऐट नव युवक आलिम नजमुस्साकिब अब्बासी नदवी की सेवायें प्रूफरीडर की हैसियत से उपलब्ध कराई गई है। अब तक सच्चा राही अपने समय पर प्रकाशित तथा प्रसारित होता रहा है, भविष्य में आशा है, इसकी सेवायें चलती रहेंगी।

बुढापे का यह चिकित्सा रहित नेत्र रोग खुदा करे किसी को न लगे, मेरा परामर्श है कि कोई भी सज्जन इस रोग में 10 हज़ार वाला लाभ रहित इन्जेक्शन कदापि न लगवाएं और दुआ करें कि मेरा अन्त ईमान पर हो।

इस्लाम ख़ुशामद नहीं करता, हुक्म देता है

—मौलाना सैय्यद अब्दुल्लाह हसनी नदवी
—अनु0: मुहम्मद हसन अंसारी

पहली चीज़— हम अल्लाह के हैं, इसलिये सब अल्लाह के लिये है

मेरे भाइयो और दोस्तो! फ़रमाया गया कि " ऐ अल्लाह के बन्दो! अल्लाह से डरो, जैसा कि डरने का हक़ है।" यानि अपना तअल्लुक़ अल्लाह से सही करलें। अक़ीदा दुरुस्त होना चाहिये। सब कुछ अल्लाह के हाथ में है। किसी के हाथ में कुछ भी नहीं है, तो अल्लाह ही से माँगना है। उसी के सामने माथा टेकना है। उसी के आगे हाथ फैलाना है। उसके अलावा कोई नहीं है जिस को दिल दिया जाये, जिससे मुहब्बत की जाये। इसमें बहुत धोखा है लोगों को। लोग कहते हैं कि बस अल्लाह एक है। अरे अल्लाह एक है तो अल्लाह को चाहना भी इतना चाहिये जितना उसका हक़ है। यानी दिल सिर्फ अल्लाह का है, दिमाग़ अल्लाह का है, जिस्म अल्लाह का है तो दिमाग़ भी किसी तरफ न जाये, दिल भी किसी को न दिया जाये हाथ भी किसी के सामने न फैले। माथा भी किसी के सामने न झुके। नाक भी किसी के सामने न रगड़ी जाये। सब अल्लाह का है तो सारे कर्म अल्लाह के ही लिये होने चाहिये। यह अक़ीदा का मतलब है। अक़ीदा का यह मतलब नहीं कि भई! हमने यह मान लिया कि अल्लाह एक है और दिल लगा हुआ है नाचन—गाने वालों के पास, खेलने—कूदने वालों के साथ। और जिससे दिल लगेगा हश्र उसी के साथ होगा। यह हदीस में है कि "आदमी उसके साथ होगा जिससे मुहब्बत होगी"। अगर ख़ुदा न ख़्वास्तः नाचने गाने वालों के साथ मुहब्बत है तो सुन लो उनका ठिकाना जहन्नम है। तो आदमी जहन्नम में जायेगा और उन्हीं के साथ उसका हश्र होगा। कितनी ख़तरनाक बात है। आज हमारे नव जवानों का हाल है कि बस उन्हीं की तस्वीरें देखते हैं। किसी का भी मोबाइल ले लिजिये, क्या—क्या तस्वीरें मिलेंगी। सब ऐसी ही उल्टी—सीधी तस्वीरें मिलेंगी। सारे नवजवान देखते रहते हैं। उन्हीं से इनके मन—मस्तिष्क दूषित रहते हैं। ख़राब रहते हैं। और उन्हीं के चक्कर में हर वक़्त पड़े रहते हैं। और जब ज़्यादा देखते हैं तब अन्दर भी वही तस्वीरें बार बार घूमती रहती हैं, यहाँ तक की सज्दा करते हैं तो वही तस्वीरें आ रही हैं। रूकू करेंगे नमाज़ पढ़ेंगे तो वही तस्वीरें आयेंगी। तो फिर क्या फ़ायदा है नमाज़ में, ऐसी नमाज़ से क्या होने वाला है, ऐसे रोज़ों से क्या होने वाला है जब कि रोज़ा की क़द्र न करें, इसके आदाब की बजाआवरी न करें। और उसका लेहाज़ न रखें जिस के लेहाज़ का हुक्म दिया गया है।

दूसरी चीज़— बुरी बातों से बचना है

पहला तो यह है कि अक़ीदा दुरुस्त होना चाहिये, दूसरा यह कि जो बुरी चीज़ें, बुरी बातें हैं उनसे बचने की कोशिश करनी चाहिये। और अच्छी बात की आदत डालनी चाहिये। कोई भी ऐसा नहीं है जो गुनहगार न हो, और बेहतरीन गुनहगार वह है जो गुनाह से तौबः करता रहे। अर्थात् कोई ऐसी दीवार नहीं जिस पर कोई दाग़ धब्बा न पड़े, लेकिन बेहतरीन दीवार वह है जिस पर पुताई होती रहे। बस इतनी सी बात है। अगर कोई दीवार की पुताई न करे तो कुछ दिन में धब्बे पड़ जायेंगे, और छोड़ दिया जाये तो फिर अन्दर वही हाल हो जायेगा और उस के बाद इमारत बैठ जायेगी। ऐसे ही अगर हमने तौबः न की, और अगर कर ली तो साफ हो जायेगा और पता भी नहीं चलेगा कि कुछ हुआ था, और अगर छोड़ दिया तो काले धब्बे बढ़ते जायेंगे यहाँ तक कि अन्दर की ईंटें निकलने लगेंगी, फिर दीवार गिर जायेगी, और

फिर आदमी नर्क में चला जायेगा। तो इसलिये आदमी को चाहिये कि मालूम कर ले कि क्या क्या ख़राबियाँ हैं। क्या क्या गल्तियाँ हैं, और कैस–कैसे गुनाह हैं, और कैसी–कैसी बेकार बातें हैं कैसे कैसे बेकार काम हैं जिसमें हम मुब्तला (ग्रसित) हैं। ग़ौर करें। बार–बार ग़ौर करें। और एक–एक कर छोड़ना शुरु करें। और अपनी पुताई शुरु करें यहाँ तक कि पूरी दीवार चिकनी हो जाये, शानदार हो जाये। जब हम ऐसा करते चले जायेंगे तो हम बनते चले जायेंगे, सँवरते चले जायेंगे।

तीसरी चीज़–

इसके बाद छोटी–छोटी बुराईयों से बचें छोटे छोटे गुनाहों से भी बचें। मामूली गुनाहों से भी बचें जिन को आप और हम नज़र अन्दाज़ कर देते हैं। इसलिये एक बात याद रखिये बड़ा आदमी छोटी बातों को देखता है और छोटा आदमी बड़ी बातों को नहीं देख पाता, तो जितना बड़ा होगा उतनी ज़्यादा छोटी बातों को देखेगा। क्योंकि जो बड़ा होगा उसकी लाइट उतनी ज़्यादा होगी। भाई! जिस बल्ब में रौशनी ज़्यादा होगी उसमें छोटी–छोटी चीज़ें भी आसानी से नज़र आयेंगी, और जिसका बल्ब बहुत कम, ज़ीरो पावर का है तो बड़े बड़े गड्ढे भी नहीं नज़र आयेंगे। तो जो जितना बड़ा आलिम, जितना बड़ा मोमिन, जितना बड़ा अच्छे काम करने वाला होगा, उतनी ही उसको छोटी–छोटी बातें नज़र आयेंगी, जो छोटी और मामूली बातों पर नज़र रखता है तो समझ लीजिये वह उतना ही बड़ा आदमी है। और जो बड़ी चीज़ों का भी ख़्याल न रखे और कहे सब चलता है। झूठ बोल दे और कहे कि अरे चलता है। सूद ले लिया, चलता है, रिश्वत ले ली, चलता है। अरे मियाँ! चलते कर दिये जाओगे तो पता चलेगा। अभी तो ऐसे आसानी से कह रहे हो चलता है, और अल्लाह मियाँ के यहाँ पहुँचे तो रिकार्ड सामने कर देंगे। ज़िन्दगी में जितनी बार कहा था चलता है। तो अल्लाह मियाँ कहेंगे इस को चलता कर दो। वहाँ चलते कर दिये जाओगे। चलता–वलता कुछ नहीं। बहुत से लोग कहते हैं, हमने सूद लिया हमको तो फलता है। एक साहब हमसे कहने लगे हम को तो फलता है, तो हमने कहा फलता नहीं फूलता है और जब फटेगा तो मालूम होगा।

बीमारी रहमत है–

बहुत से लोग समझते हैं कि बीमार नहीं हैं तो अल्लाह मियाँ बड़े ख़ुश हैं। हम को क्या पता कि अल्लाह तआला नाराज़ है। जो अल्लाह के नेक बन्दे होते हैं, और बहुत दिनों तक उन्हें कोई बीमारी न हो तो वह डरते हैं कि अल्लाह तआला नाराज़ तो नहीं। और जब बीमार हो जाते हैं तो बड़े ख़ुश होते हैं कि अल्लाह मियाँ ख़ुश हैं। इसलिये कि बीमारी से गुनाह धुलते हैं, जैसे किसी बच्चो को न धुलाया जाये, बच्चे जो होते हैं वह गन्दगी में बिस्तर में पड़े रहते हैं, और जब उनकी माँएं उनको धुलाती हैं तो वह कितना चिल्लाते हैं, रोते हैं, और अगर बच्चे को छोड़ दीजिये ऐसी ही पैन्टी बन्धी रहे और न धुलाइये तो क्या बदबू पैदा होगी, हालत ख़राब हो जायेगी सब की, और बच्चा कहे कि मैं तो कभी रोता ही नहीं, मुझे तो कोई तँग ही नहीं करता, मेरी माँ मुझे धुलाती ही नहीं, तो बच्चे की हालत क्या हो जायेगी। लेकिन जब माँ धुलाती है तो कभी पैर ऊपर करती है, कभी सर नीचे करती है। बच्चा हँगामा मचा देता है। ऐसे ही इन्सान को बीमारी होती है, तब नश्तर लगाया जाता है, इन्जेक्शन लगाया जाता है, हॉस्पिटल में रखा जाता है, रोता है, चिल्लाता है, लेकिन उसको परेशान नहीं होना चाहिये क्योंकि उसकी अच्छाई के लिये काम हो रहा है, उसकी सफाई हो रही है, उसको अच्छा बनाया जा रहा है। अगर यह न हो तो परेशानी की बात है। लेकिन हम लोगों की हर चीज़ उल्टी हो गयी है। यहाँ भी सोच बदल गयी।

यह अल्लाह तआला की तरफ से बड़े फ़ज़्ल का मामला है कि हमारी धुलाई हो रही है।

और जब धुलते रहेंगे तो सेहत भी अच्छी होगी, तरक़्क़ी भी करेंगे। और बुलन्द होते चले जायेंगे। तो तीसरा दर्जा यह है कि आदमी छोटी–छोटी बातों से भी बचे और अच्छे काम करने की कोशिश करे और आख़िरी दर्जा यह है कि अल्लाह के अलावा कभी किसी का ख़्याल भी न आये यानी ग़ैरुल्लाह से बचे। ग़ैर का ख़्याल भी न आये। बस हर समय अल्लाह पर नज़र हो और अल्लाह जो कहे उस पर और सुन्नत पर अमल करे। एक बड़े बुज़ुर्ग हैं हज़रत इमाम अबुल हसन शाज़ली रह0, उनसे किसी ने पूछा, हज़रत आप का क्या हाल है? उन्होंने कहा क्या पूछते हो? मैं जो चाहता हूँ व अल्लाह चाहता है और हुज़ूर सल्ल0 मेरी नज़र से ओझल नहीं होते तो मेरा हाल क्या पूछ रहे हो। बात उन्होंने बता दी। यानी मतलब यह है कि हर समय अल्लाह से ऐसा तअल्लुक हो गया है कि जो भी अल्लाह तआला हमारे साथ मामला करते हैं हम ख़ुश हैं, जब हम ख़ुश हैं तो वह ख़ुश है यानी जब अल्लाह मियाँ राज़ी तो हम राज़ी। तो हमें परेशानी होती ही नहीं। हमने अल्लाह की मर्ज़ी में अपनी मर्ज़ी को फ़ना कर दिया। अब हमारी कोई मर्ज़ी ही नहीं। जो अल्लाह चाहे, हमारी उसमें ख़ुशी है। और हुज़ूर सल्ल0 का मामला यह है कि हर समय सुन्नत को देखता हूँ। बोलने में, चलने में, उठने बैठने, खाने पीने में ख़्यालात और जज़्बात में (विचार और भावनाओं में) आदि आदि में। सुन्नत क्या है? जब हर समय सुन्नत को सोचेंगे तो हुज़ूर सल्ल0 हमारी नज़र में हैं। यह हमारे अल्लाह के नेक बन्दे जो होते हैं उनका यह हाल था और हमारा हाल इसके बिल्कुल उल्टा है। अल्लाह याद ही नहीं आता। यहाँ तक कि यहाँ (तकिया, रायबरेली में) एक साहब दरिया में डूबने लगे। बहुत पढ़े लिखे आदमी थे, आलिम थे। लेकिन अल्लाह से तअल्लुक नहीं जोड़ा था। डूबने लगे तो कहने लगे कि कोई बचाने वाला है, पकड़ो–पकड़ो। हमारे हज़रत मौलाना अली मियाँ नदवी रह0 गये और उनको निकाल लाये। जैसे निकाला जाता है वैसे निकाला। तो उन्होंने बाद में आकर यह कहा कि अगर हमने अल्लाह–अल्लाह किया होता तो मुँह से भी अल्लाह–अल्लाह निकलता। तो ऐसी कठिन घड़ी में भी अल्लाह याद नहीं आता। लेकिन जो लोग हर पल अल्लाह–अल्लाह करते हैं, दिल से, दिमाग़ से, ज़बान से तो उन लोगों को ऐसे समय में अल्लाह याद आता है। फिर सुन्नत के मुताबिक अमल करना और बार–बार देखते रहना कि सुन्नत क्या है? जो इस पर अमल करेगा वही सब से बड़ा आलिम और अल्लाह का चहेता है। अल्लाह तआला ऐसे आदमी को इल्म भी अता करता है, इल्म के दरवाज़े उसके लिये खोल दिये जाते हैं। और उस को वह समझ में आता है जो दूसरों को नहीं आता।

तो मेरे भाइयों और दोस्तों! ज़रूरत इस बात की है कि हम आप इस रमज़ानुल मुबारक की क़द्र करने वाले बन जायें। जो गुज़र गया वह गुज़र गया। मोमिन गुज़रने पर नादिम (पश्चाताप करना) तो होता है और अल्लाह से माफ़ी माँगता है, लेकिन मोमिन की आइन्दा की फ़िक्र होती है। अब जो बचे हुए दो चार दिन रह गये हैं उस से फ़ायदा उठा लें, उस को न छोड़ें, और सो कर नष्ट न करें, जो सोता है वह खोता है। जो बात करना है वह क़त्ल करता है। लेकिन सोकर खोयें न आपस में उल्टी सीधी बात करके क़त्ल करें। और इधर उधर के बेकार काम में लगकर अपना समय नष्ट न करें। अगर एक घड़ी भी अल्लाह ने कुबूल कर ली तो काम बन जायेगा। यह जो हम लोग कर रहे हैं यह महज़ फ़ारमेल्टी है। अल्लाह मियाँ ने कहा कि पूरा करो तो हम पूरा कर रहे हैं, लेकिन कुबूल तो वह करेंगे। जिस को चाहे कुबूल कर लें जिस को चाहें न करें। जिस का दिल अच्छा होगा और नीयत साफ होगी उसका अमल कुबूल किया जायेगा। ख़ूब सूरत इन्सान को पसन्द और ख़ूब सीरत (सदाचार) अल्लाह को पसन्द।

❖❖❖

लाडलों की गलती छिपाने से बाज आएं माँएं

अभिभावकों की लापरवाही से फैक्टीशियम डिसऑर्डर के शिकार हो रहे हैं बच्चे

घटना एक– लामार्टिनियर ब्वॉयज स्कूल से कक्षा आठ के तीन छात्र कानपुर भाग गये। होटल में मिले तो खुलासा हुआ कि घर में बिना बताये दोस्तों के साथ मौजमस्ती करने चले गए थे। अभिभावक रात तक हैरान परेशान घूमते रहे।

घटना दो– मैनेजमेन्ट व इंजीनियरिंग कॉलेज के दो छात्र अपने छः दोस्तों के साथ बाइक से ही मथुरा घूमने के लिए निकल पड़े। घर वालों को भी कुछ नहीं बताया। दो दोस्त मथुरा में एक सड़क हादसे में मौत के शिकारं हो गए तब झूठ का खुलासा हुआ।

घटना तीन– हज़रतगंज के एक प्रतिष्ठित स्कूल के दो लड़के स्कूल में छुट्टी होने के बाद ट्रेन से दिल्ली चले गये। उन्होंने घर में बताया था कि कॉलेज का टूर जा रहा है। घरवालों ने स्कूल से सम्पर्क किया तो पता चला कि कोई टूर ही नहीं गया था। इस पर घर वालों ने बच्चों को डाँटा तब जाकर वे लौटे।

इस तरह की न जाने कितनी घटनाएँ शहर में हो चुकी हैं। बड़े और नामी स्कूलों के बच्चे भी इससे अछूते नहीं। इस मुद्दे पर शहर के मनोचिकित्सक, स्कूलों के प्रिंसिपल और पुलिस अफसरों से बात की गई तो सबकी यही राय निकली कि आधुनिकता के दंभ में बच्चों की एक जिद पर उन्हें मँहगे मोबाइल देना, फर्राटा भरने वाली बाइक थमा देना अब बेहद आम हो गया है। आज बच्चों से बात करने का अभिभावकों के पास समय नहीं है। संवादहीनता की यही स्थिति बच्चों को ग़लत राह पर धकेल रही है। इसकी नींव झूठ बोलने से पड़ती है फिर आगे बड़े कारनामे जुड़ते हैं।

हाल ही में कई बच्चों के स्कूल से भाग कर दूसरे शहर में जाकर मौज मस्ती करने की घटनाएँ सामने आई हैं। विशेषज्ञों का कहना है कि अगर समय रहते अभिभावक नहीं चेते तो भविष्य में इसके और भयावह नतीजे दिखाई देंगे।

चि0वि0वि0 के मानसिक रोग विभाग के डॉ0 हरिजीत सिंह का कहना है कि कई बार बच्चों को पढ़ाई में दिक्कतें आने लगती हैं तो वे झूठ का सहारा लेते हैं। मसलन छोटे बच्चे सिर दर्द, पेट दर्द जैसे बहाने बनाने लगते हैं तो कुछ बच्चे स्कूल कॉलेज व घर में झूठ बोलकर मौज–मस्ती करने निकल पड़ते हैं। डॉ0 सिंह का कहना है कि बच्चों में यह कोई शारीरिक रोग नहीं होता है बल्कि वे 'फिक्टीशियस डिसआर्डर' (झूठ बोलने की प्रवृत्ति) का शिकार होते हैं। ऐसे मामलों की ज़िम्मेदार अधिकतर बच्चों की माँ होती है। वह अपने बच्चों की गलती छिपाती है और इससे ही बच्चा बेखौफ़ हो जाता है।

राममनोहर लोहिया अस्पताल के मानसिक रोग विशेषज्ञ डॉ0 देवाशीष शुक्ल कहते हैं कि टी0वी0 पर आने वाले सीरियल, कार्टून भी बच्चों के विकास में बाधक बन रहे हैं। इन सीरियलों को देखकर बच्चे कई तरह की महत्वाकाक्षाएँ पाल लेते हैं लेकिन इनके पूरी न होने पर वे झूठ का सहारा लेने लगते हैं। अभिभावक इतने व्यस्त हो गए हैं कि वे पैरेन्टस मीटिंग तक में जाने से कतराने लगे हैं।

एस0एस0पी0 राजीव कृष्ण कहते हैं कि स्कूल प्रशासन और अभिभावक दोनों की बराबर ज़िम्मेदारी है कि वे बच्चों को सही परामर्श दें। यह भी कोशिश होनी चाहिए कि अभिभावकों व टीचर के बीच समय–समय पर मुलाक़ात होती रहे। यह सब न होने से ही ऐसी घटनाएँ बढ़ रही है। ब्राइट लैंड इंटर कॉलेज के चेयरमैन राम मानस का कहना है कि अभिभावकों को और जागरूक होना पड़ेगा। अक्सर वे मॉर्डन बनने के चक्कर में बच्चों को मँहगी चीज़ें ख़रीद कर देते हैं और यह नहीं देखते हैं कि उनके बच्चे अभी इन चीज़ों के इस्तेमाल के लायक हुए हैं कि नहीं।

सेंट जोजफ इंटर कॉलेज के प्रिंसिपल अनिल अग्रवाल तो कहते हैं कि 12 से 17 वर्ष की उम्र के बीच के बच्चों को सही मार्गदर्शन की ज़रूरत होती है। वर्तमान समय में इतना खुलापन आ गया है कि बच्चे हर चीज़ के बारे में जानना चाहते हैं पर अभिभावक उन्हें समय ही नहीं दे पाते हैं। अक्सर बच्चे अपने पिता से संवाद चाहते हैं लेकिन वे बच्चों की माँ पर ही सब ज़िम्मेदारी डाल देते हैं।

अंतर्राष्ट्रीय समाचार

- डॉ0 मुईद अशरफ़ नदवी

अयोध्या के मंदिर–मस्जिद विवाद पर हाई कोर्ट लखनऊ की फुलबेंच के तीस सितम्बर को दिये गए फैसले से इतिहासकारों, संस्कृतिकर्मियों और बुद्धिजीवियों का एक बड़ा धड़ा सहमत नहीं है। इस धड़े ने अब सुप्रीम कोर्ट में हाई कोर्ट के फैसले को चुनौती देने के विकल्पों पर सक्रिय होने की तैयारी शुरु की है। यह भी तय हुआ है कि उत्तर प्रदेश के अलावा देश के अन्य हिस्सों में इस मुद्दे पर परिसंवाद आयोजित किए जाएंगे।

'अनहद' और 'इंसाफ' संस्थाओं की ओर से 'उदास मौसम के खिलाफ' शीर्षक सम्मेलन का संचालन प्रो0 अपूर्वानंद ने किया। सम्मेलन में इतिहासकार प्रो0 के0एम0 श्रीमाली ने कहा कि हाईकोर्ट ने भारतीय पुरातत्व संरक्षण (ए0एस0आई0) की रिपोर्ट को बहुत ज़्यादा अहमियत दी है मगर रिपोर्ट के नौ अध्यायों में कही गई बातें उसके दसवें अध्याय के निष्कर्षों से कतई मेल नहीं खातीं। उन्होंने आरोप लगाया कि दसवां हिस्सा तत्कालीन केन्द्रीय मंत्री डा0 मुरलीमनोहर जोशी की पहल पर लिखवाया गया और उसमें जानबूझ कर गलत तथ्य डाले गए। उन्होंने बाबरी मस्जिद के पूरे प्रकरण में ए0एस0आई0 की भूमिका को ही संदिग्ध करार दिया। इतिहासकार व विद्वान प्रो0 के0एन0 पणिक्कर ने कहा कि हाईकोर्ट ने साक्ष्यों और तथ्यों के बजाए आस्था और विश्वास को तरजीह दी है। यह किसकी और कैसी आस्था है? अगर यह हिन्दुओं की आस्था है तो फिर मुसलमानों की आस्था का क्या होगा? उन्होंने कहा कि यह गलत वजहों से दिया गया एक ऐतिहासिक फैसला है।

लिब्रहान आयोग के चीफ स्टैण्डिंग काउंसिल अनुपम गुप्ता ने हाईकोर्ट लखनऊ की फुलबेंच में शामिल न्यायमूर्ति सुधीर अग्रवाल और न्यायमूर्ति एस0यू0खान के प्रति पूरा सम्मान जताते हुए कई बिन्दुओं पर फैसले के प्रति असहमति जताई। उन्होंने कहा कि यह फैसला 'धर्मनिरपेक्ष अदालत' का नहीं है। जिसका कब्जा तक नहीं उसे भी मिल्कियत में हिस्सेदारी दे दी गई। शबनम हाशमी ने दावा किया कि फैसले के पीछे केन्द्र सरकार, खास तौर पर कांग्रेस सक्रिय रही है। लखनऊ वि0वि0 की पूर्व कुलपति व साझी दुनिया की प्रतिनिधि प्रो0 रूपरेखा वर्मा ने कहा कि मिल्कियत का झगड़ा आस्था के आधार पर तय किया गया और अगर सुन्नी वक्फ बोर्ड का मुकदमा कालातीत हो गया था तो फिर मुसलमानों को विवादित स्थल का एक तिहाई हिस्सा दिया क्यों गया?

वरिष्ठ पत्रकार फराह नकवी ने कहा कि अदालत के इस चर्चित फैसले को भूल जाने की बातें कही जा रही हैं, मस्जिद मंदिर के झगड़े को छोड़ अन्य बुनियादी मुद्दों पर गौर करने की वकालत की जा रही है आखिर क्यों? शर्त रखी जा रही है कि विकास चाहिए या इंसाफ? इस फैसले के जरिये बाबरी मस्जिद विध्वंस का अपराध करने वालों को ही मिल्कियत में हिस्सा दे दिया गया।

❖❖❖